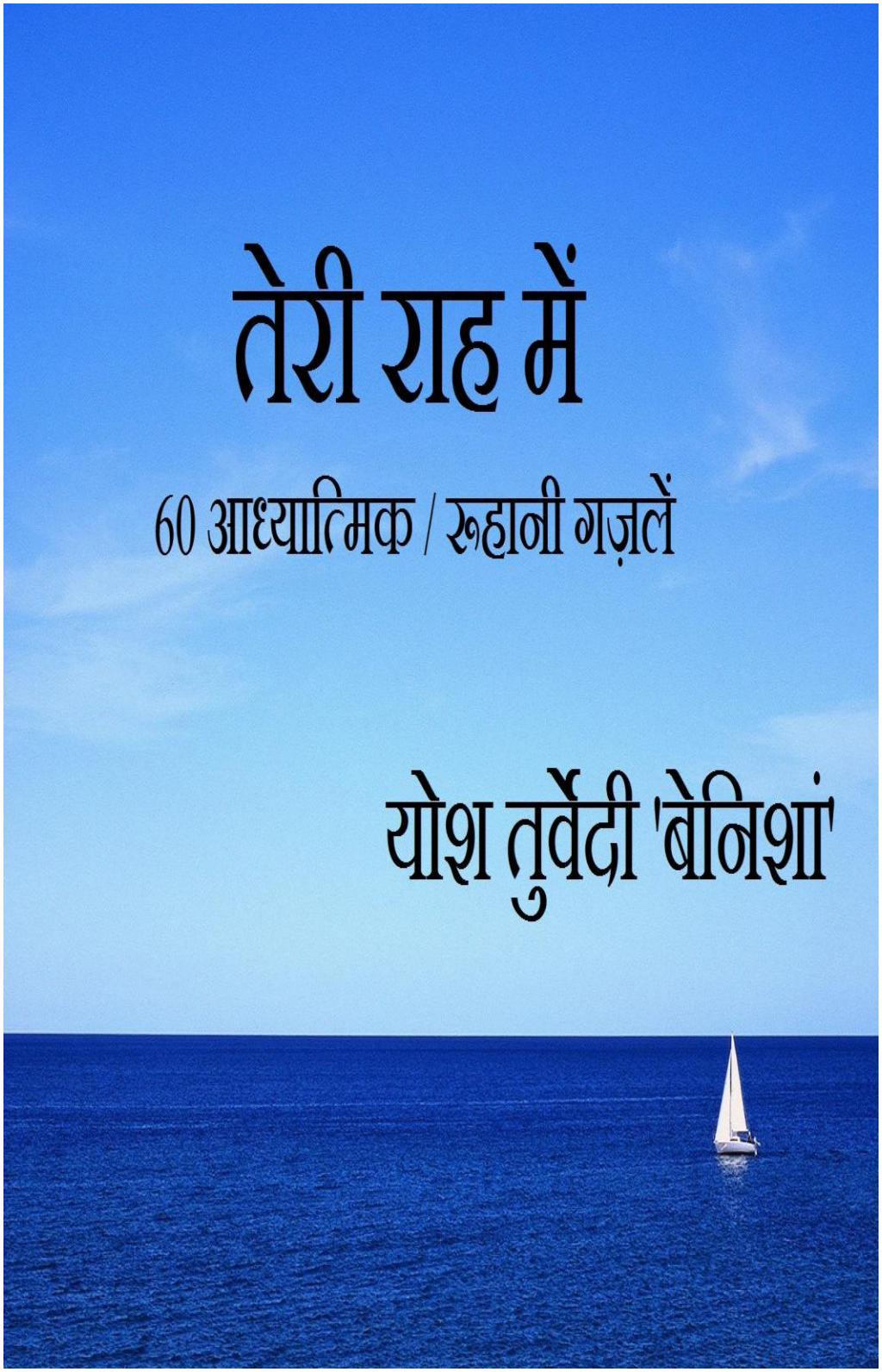
तेरी राह में
60 आध्यात्मिक / रूहानी गज़लें
योश तुर्वेदी 'बेनिशां'

तेरी राह में

60 आध्यात्मिक / रूहानी ग़ज़लें

योश तुर्वेदी 'बेनिशां'

निशां मिटा के अपना, फिर ये ग़ज़ल कहता हूँ

जाविदां शग़ल कहता हूँ, आबरू ख़लल कहता हूँ

1. इक नज़र से तोड़ दी

इक नज़र से तोड़ दी, जंजीर हस्ती की मेरी
नीम बाज़ आँखों ने लूटी, जागीर हस्ती की मेरी

मैं रहा न मुझ में खुद, कोई और मुकामी हो गया
अपनी अजमत से छीन ली, तस्ख़ीर हस्ती की मेरी

शौके शहादत थी मेरी, सर सौंपने पे नाज़ था
बेसाख्ता कुर्बत से बढ़ाई तासीर हस्ती की मेरी

इक मुअम्मा है कि सरफरोश भी मैं खुद ही हूँ
खुद ही खुद तामील करूँ, तामीर हस्ती की मेरी

महब हूँ ख्याले यार में, खल्वत पसंद इस दौर में
उज़लते अफ़्कार फ़रोज़ा, तस्वीर हस्ती की मेरी

जुस्तजू जिसकी की, वो राज़दां भी मैं ही था
तसव्वुफ़ का खेल था, तदबीर हस्ती की मेरी

तेरे तसद्दुक के निसार, तेरे ख़ुलूस के निसार
चाक गिरेबान 'बेनिशाँ' नहीं, तकसीर हस्ती की मेरी

मुक़ामी - स्थित , अजमत - कृपा , तस्ख़ीर - सम्मोहन , कुर्बत - सामीप्य , तासीर - प्रभाव , मुअम्मा - पहेली , तामील - अनुसरण , तामीर - निर्माण , महब - लीन , खलवत - एकांत , "उज़लते अफ़्कार फ़रोज़ा" - एकांत चिंतन में रौशन , जुस्तजू - इच्छा , राज़दां - रहस्य का भागीदार , तसव्वुफ़ - दर्शन , तदबीर - तरकीब , तसद्दुक - कृपा , खुलूस - निर्मलता , चाक गिरेबान - अहं से रिक्त , तकसीर - गलती

2. सारे जहां का सौदा

सारे जहां का सौदा, इस बेखबरी के वास्ते

दस्तगीरी के वास्ते, जल्वागिरी के वास्ते

जुस्तजू मैं हूँ खुद की, बारहा क्यों ढूंढा किया

बेखुदी बस रास आई, तेरी दीदावरी के वास्ते

दुनिया की कशमकश से, उकता गया और हुआ मकीं

नफ्स की तुग़ियानी की, चारागरी के वास्ते

मुंतज़िर हूँ मैं उस, होशरुबा खिरामे नाज़ का

कामिल दिलकश हमसफर की, हमसफरी के वास्ते

पस्तिए हिम्मत न होउं, कुलफते राहे अज़ाब

देख लीजो आए न आंच, तेरी पयम्बरी के वास्ते

ये शिगुफ्ता परी पैकर चेहरा और ये इनायतें तेरी

फलक तू गवाह रहियो, इस सरवरी के वास्ते

तू ही तू है हर जगह, मेरा पता अब लापता

'बेनिशां' मतलूब है, इस दानिशवरी के वास्ते

दस्तगीरी - मदद , जल्वागिरी - महानता , जुस्तजू - इच्छा , दीदावरी - दर्शन , कशमकशे दुनिया - दुनिया की उलझन , मकीं - स्थित , नफ्स - मन , तुग़ियानी - बाढ़ , चारागरी - इलाज , मुंतजिर - प्रतीक्षित , होशरुबा - होश उडाने वाली , खिरामे नाज़ - नाज़ भरी चाल , कामिल - पूर्ण , पस्तिए हिम्मत - साहस में कमी , कुलफते राहे अज़ाब - राह के कष्ट , पयम्बरी - संदेश वाहन , शिगुफ्ता परी पैकर - खिला हुआ सुंदर , इनायतें - कृपा , फ़लक - आसमान , सरवरी - प्रधानता , मतलूब - वांछित , दानिशवरी - बुद्धिमत्ता

3. सर ढूँढे पे मिले नहीं

सर ढूँढे पे मिले नहीं, गिरेबां में बस
नाम इलाही रौशन रहे, मेरी ज़ुबां में बस

फ़िक्र नहीं गर्दिशे अय्याम, या हो राहत फजा
पुर नूर चिराग़ जलता रहे, तूफ़ां में बस

ये कश्मकशे दहर और ये तल्खिए हयात
राहे रास्त का हौसला जगे, इंसां में बस

हैं नहीं नागवार कुछ, कयामे राह ए सिद्क में
जब तक जिए इमां रहे, जिस्मों जाँ में बस

वारफ़तगी ज़ाहिर न हो, तकल्लुम में दाइमी
खुलूस और शिकेब रहे, सबकी जबां में बस

नाजां न हो, आराइशे हस्ती भी हो नापैद
अता हो जाए क़रीबो कुर्ब, इस जहाँ में बस

मेरा होना रहे राज़, मेरा मरना भी रहे राज़
जिए तो दासतां में 'बेनिशां', मरे दासतां में बस

गिरेबां - गर्दन , इलाही - ईश्वर , रौशन - प्रकाशित , गर्दिशे अय्याम - काल चक्र , राहत फजा - आनंद दायक , पुर नूर - पूर्ण प्रकाशित , कश्मकशे दहर - जीवन संघर्ष , तल्खिए हयात - जीवन कटुता , राहे रास्त - सही रास्ता , नागवार - मुश्किल , कयामे राह ए सिदक - सत् पथ आरूढ़ता , वारफ़तगी - स्वच्छंदता , ज़ाहिर - प्रकट , तकल्लुम - बातचीत , दाइमी - स्थायी , शिकेब - धैर्य , नाजां न हो - गर्व न हो , आराइशे हस्ती - जीवन होने की खूबसूरती , नापैद - अजन्मा , क़रीबो कुर्ब - सामीप्य , दासतां - कहानी

4. जान भी दे दी

जान भी दे दी, क्या अब भी हिसाब बाक़ी है
बेताब अश्कों तुम्हारी, तुगियानी सैलाब बाक़ी है

बे हदूद दौड़ता जा रहा, है अंदाज नफ्सानी मेरा
नफ्सकुशी कठिन है जबतक, जीस्त में शबाब बाक़ी है

ये तुम्हारी उम्मीदियां दराज़ और ये मेरा इज़्तिराब
इंतज़ार में हूं तेरी उस नज़र का, और इंक़लाब बाक़ी है

मैं हूं शोरीदासर और उधर तुम हो अगियारे अदम
अर्ज़ मुज्तरी मैंने पेश की, तिरा जवाब बाक़ी है

हो गई पैहम सबूरी, बहुत हुआ इंतिहाए ज़ब्त
अब थोड़ा तो चैन लो, आखिरी आदाब बाक़ी है

अर्जे नियाज़े ग़म सुनो, लब आशना बरहम सुनो
सीना ब सीना खेल हुआ, नज़रों की शराब बाक़ी है

सारी नियाजें पूरी हुईं, सारी दुआएँ भी पूरी हुईं
बका उल बका होने का 'बेनिशां', आखिरी ख़्वाब बाक़ी है

तुगियानी - बाढ़ , बे हदूद - बिना सीमा , नफ्सानी - मायावी , नफ्सकुशी - मनोनिग्रह , जीस्त - जीवन , शबाब - यौवन , दराज - लंबी , इज़्तिराब - व्याकुलता , शोरीदासर - दीवाना , अगियार - परायापन , अदम - अनस्तित्व , मुज्तरी - व्याकुलता , पैहम - निरंतर , सबूरी - सब्र , इंतिहाए ज़ब्त - बर्दाश्त की सीमा , अर्जे नियाजे ग़म - दुखी प्रेम की प्रार्थना , बरहम - टूटन , नियाज़ - आकांक्षा , बका उल बका - पूर्ण विलय

5. मौजूद भी रहते हैं हर शै

मौजूद भी रहते हैं हर शै, कहते हैं वो रूखसत हो गए
वो यहीं हैं, कहीं गए नहीं, वो पुर-वुसअत हो गए

सागगार तो हुए न हम, मरहमे असरार ख़्यालों के
जीना तो जीना है नहीं, अब जीने की आदत हो गए

वारिद दिल में हुए मेरे, मुकम्मल क़ब्ज़ा कर लिया
दिल तो मेरा रहा नहीं, अब दिल की हसरत हो गए

मदारत कितनी भी की थी, आसूदा क्यों हुए नहीं
सुकूनो सुकूत में इस तरह, बेवजह ही वहशत हो गए

काम चल सकता नहीं अब, उस असलाफ के सिवा मेरा
पनाह तो माँगा किया करे और रूह की ज़रूरत हो गए

वो सामने भी थे क़रीब भी थे, देखने का ज़ौक़ था
मुझमें समा गए खुद गोया, सदमा-ए-फुरकत हो गए

वो खलवत मेरी, वो जलवत तेरी, यूँ रुक कर के ठहर जाना तेरा
बात बस इतनी है 'बेनिशां' हम पुर-मसर्रत हो गए

रूखसत - विदा , पुर-वुसअत - पूर्ण क्षमतावान , सागगार - अनुकूल , मरहमे असरार - रहस्य मर्मज्ञ , वारिद - उतरे , मुक्कमल - पूर्ण , मदारत - आवभगत , आसूदा - संतुष्ट , सुकून - चैन , सुकूत - एकांत , वहशत - घबराहट , असलाफ - बुजुर्ग , पनाह - शरण , सदमा - धक्का , फुरकत - जुदाई , ज़ौक़ - चाव , खलवत - एकान्त , जलवत - सभा , पुर मुसर्रत - पूर्ण चैन

6. दिल चाक किए जाते हैं

दिल चाक किए जाते हैं, मय भी पिलाए जाते हैं
दहरो कौनेन के छुपे, राज़ों को बताए जाते हैं

हैं बुलहवस हम तेरी, इबादत के क़ाबिल भी नहीं
क्यों हम जैसे नाकिसों के, नख़रों को उठाए जाते हैं

मआले आशिक़ी है बस, तेरी ज़ात में फ़ना हो जाना
वल्लाह रहमानी तेरी, जो ऐबों को छुपाए जाते हैं

खाकिया हूँ मैं, बुलन्द है तू, यकता है तू, अज़ीम है तू
आवाज़े गैब मुझे, बड़े अल्ताफ़ से सुनाए जाते हैं

मानूस हैं वो मेरी, सब तकसीरों से यों हर तरह
करके किर्बियाई मेरे, बदएमालों को जलाए जाते हैं

तसद्दुक उनका कभी अफलाकों में नहीं होता महदूद
पुर-रौशन बनाए जाते हैं हस्ती मिटाए जाते हैं

तुर्फाकारी कमाल उनकी, सबसे अजब और बेमिसाल
हस्ती के चिराग़ों को अबस, 'बेनिशां' बुझाए जाते हैं

चाक - चीरना , दहरो - जगत , कौनेन - परलोक , बुलहवस - हवस के गुलाम , नाकिस - अयोग्य , मआले आशिक़ी - प्रेम का परिणाम , ज़ात में फ़ना - ईश्वर निमग्न , रहमानी - ईश्वरीयता , खाकिया - पैरों की धूल , बुलन्द - ऊँचा , यकता - अद्‌वितीय , अल्ताफ़ - कृपा , आवाज़े गैब - ईश्वरीय नाद , मानूस हैं - परिचित हैं , तकसीरों - अपराधों , किर्बियाई - बुज़ुर्गी , बदएमाल - दुश्कर्म , तसद्दुक - कृपा , अफलाक - आसमान , महदूद - सीमित , रोशन - प्रकाशित , तुर्फाकारी - विलक्षणता , अबस - अनियंत्रित

7. खोजा खुद को दूर तक

ख़ोजा खुद को दूर तक, फिर भी मगर मिला नहीं
तायरे लाहूती हूं मैं, मेरा कोई नक्शे पा नहीं

तौहीद में हूँ मैं गुम, हूँ खला में आशकार
कर सके मुझे जो कैद, ऐसा घर बना नहीं

मर चुका मरने के पहले, ताअते हक में हूं फ़ना
कशमकशे दहर रहूँ, ऐसी मेरी अदा नहीं

दिल ए सद चाक लिए हुए घूमता हूँ गली गली
जाविदां चिराग हूँ मैं, वो जो कभी बुझा नहीं

किस्सा ए खुद निगहदारी, जो कभी लिखा नहीं
सुनते रहे तुम ताउम्र, मैंने तो कुछ कहा नहीं

तुग़ियानी है फज्ल की, कैफ़ियत नातमाम है
मुहीते बेकरां पुर असर, महशरी के सिवा नहीं

सिजदा रवां उस हुस्न पे, जो कभी दिखा नहीं
सनम आशना हो 'बेनिशां', ऐसी मेरी वफा नहीं

तायरे लाहूती - शून्य का पक्षी , नक्शे पा - पैरों के निशान , तौहीद - एकईश्वरवाद , खला - शून्य , आशकार - प्रगट , ताअते हक - ईश्वर आराधना , फ़ना - लीन , कशमकशे दहर - जीवन संघर्ष , सद चाक - सौ टुकड़े , जाविदां - अमर , खुद निगहदारी - आत्म निरीक्षण , ताउम्र - पूरी उम्र , तुग़ियानी - बाढ़ , फजल - कृपा , कैफ़ियत - कृपा , नातमाम - अमर , मुहीते बेकरां - अथाह सागर , पुरअसर - पूर्ण प्रभावशाली , महशरी - प्रलय , सिज़दा रवां - पूजा रत , सनम आशना - मूर्ति पूजक

8. ज़रा ठहर जाइए

ज़रा ठहर जाइए, अभी तैयार नहीं हूँ मैं

गर्क हूँ तेरे ख़्वाब में, अभी बेदार नहीं हूँ मैं

फरेबे क़ज़ा भूल गया, कनाअत को पहुँच गया

ख़्वाहिशें सब ख़त्म हुईं, अब बेक़रार नहीं हूँ मैं

तेरी पैहम कोशिशें, दिल सद चाक करा किए

ऐसी क्या बेक़रारी है, सीना फिगार नहीं हूँ मैं

निशातो लज्ज़त मिल गई, वहम सारे मिट गए

दुनिया के मेले मौज में, ख़रीदार नहीं हूँ मैं

उठ गया पर्दा ए खुदी, सब रूदाद अफशां हुए

बेखुद हूँ कबसे पड़ा, तेरा राज़दार नहीं हूँ मैं

क़ैदे हस्ती से निकल गया, हर नफस हुई नशात

लाजवाल जो हो गया, अब बीमार नहीं हूँ मैं

इतंखाब हुआ उम्मत में तेरी, बतौर अज़ीम ग़ुलामों के

बेपनाह तमन्नाओं में 'बेनिशां', अब गिरफ़्तार नहीं हूँ मैं

गर्क - डूबा हुआ , बेदार - जागृत , फरेबे कज़ा - मृत्यु धोखा , कनाअत - संतोष , पैहम - निरन्तर , सद चाक - सौ टुकड़े , सीना फिगार - विक्षत हृदय , निशातो लज्ज़त - आनंद , खुदी - अस्तित्व , रूदाद - वृतांत , अफशां - प्रकट , राज़दार - राज जानने वाला , नफस - साँस , नशात - हर्ष , लाजवाल - अमर , इतंखाब - चुना हुआ , उम्मत - समूह , अज़ीम - प्रमुख , बेपनाह तमन्नाएं - असीम इच्छाऐं

9. ये कौन सा दयार है

ये कौन सा दयार है, जहाँ अपनी ख़बर नहीं मुझको
होश की पूछो तो होश है, कहीं मगर नहीं मुझको

मैं हूँ गुंचाए मलकूती , मैं तायरे लाहूती हूँ
इस दारे फ़ानी में कहीं अब, गुज़र नहीं मुझको

जाविदां मैं हो गया, महे कामिल मैं हो गया
होशो खिरद का पता नहीं, हस्ती नज़र नहीं मुझको

उस सोजे दरूं में मैं कब से और कब का हो चुका हूँ गुम
मर मिटा परवाना हूँ, है कभी सहर नहीं मुझको

क़ैदे हस्ती से निकल गया, हुआ वजहे-इल्तिफात
कश्मकशे दहरे दुनिया का अब कहीं असर नहीं मुझको

अन्दोहो मुसीबत तो अब, नमोतबर सी बात है
जल चुका हूँ कभी का, कनाअत मगर नहीं मुझको

अब क़ैदे तलातुमे हयात से मैं नारसाई हो गया
कहे देता हूँ 'बेनिशां', है मौत का डर नहीं मुझको

दयार - स्थान , गुंचाए मलकूती - अनंत की कली , तायरे लाहूती - अनंत का पक्षी , दारे फ़ानी - नश्वर संसार , जाविंदा - अमर , महेकामिल - पूर्ण चन्द्र , खिरद - ज्ञान , सोजे दरूं - भीतरी आग , परवाना - पतंगा , सहर - सुबह , कैदे हस्ती - होने की कैद , वजहे-इल्तिफात - कृपा के कारण , कश्मकशे-दहरे दुनिया - दुनिया का जीवन संघर्ष , अन्दोहो मुसीबत - दुख व व्यथा , नमोतबर - अविश्वसनीय , कनाअत - संतुष्टि , नारसाई - पहुँच के बाहर , तलातुमे हयात - जीवन की उथल पुथल

10. ऊँचे अंजुम फिर डूब गए

ऊँचे अंजुम फिर, डूब गए मँझधार में
होशो दानिश के पते नहीं, गमे आज़ार में

पूछो न हाल, उन मलक मुख्तारों का अब मुझसे तुम
नाकामयाब जो हो गए, उस फस्लो बहार में

वो दरवेश ब कमाल, उसकी पुर्शिसें पाएमाल
खुलते गए सब राज जानां, उस कामिल के प्यार में

चंद ताअस्सुबी लोगों की, इदराक का हाल ये
सारे जहाँ को बाँट दिया, मज़हबी दीवार में

बज्म में यूँ आते चले गए और जल्वागरी दी बिखेर
दिल अबस अब रहा नहीं, मेरे इख़्तियार में

उसकी तावानी न पूछ, उसकी तुगयानी न पूछ
जमाले यार देख मचला, दीवाना, हर बार मैं

वहम ख़त्म हुए तमाम, ताम्मुल ख़त्म हुए तमाम
अब क्यों खड़ा है तू 'बेनिशां', दीद के इतंज़ार में

अजुंम - तारे , होशो दानिश - होश व बुध्दि , गमे आज़ार - कष्ट , मलक - फरिश्ते , मुख्तारों - शासकों , फस्लो बहार - बसंत की उपज में , दरवेश - साधु , ब कमाल - आश्चर्यपूर्ण , पुर्शिसे - हाल , पाएमाल - सदकर्मी , जानां - प्रियतम , कामिल - पूर्ण , ताअस्सुबी - संकीर्ण , इदराक - बुध्दि , मजहबी - धार्मिक , बज्म - महफिल , जल्वागिरी - प्रभाव , अबस - बिना बस के , इख्तियार - नियंत्रण , तावानी - दीप्ति , तुगयानी - तूफ़ान , जमाल - सौंदर्य , ताम्मुल - संकोच , दीद - दर्शन

11. खत्म कर दे तबाह कर दे

खत्म कर दे, तबाह कर दे, मेरा चैन सुकून सब खराब कर दे
पर यही मांगता हूँ तुम से, करम अपना बेहिसाब कर दे

तुम को पाने की कोशिशें सब, पूरी तरह नाकाम हो चुकी हैं
सबको खोऊँ तुझको पाऊँ, बस ऐसा कुछ हिसाब कर दे

बड़ी है मुश्किल इस दारे फानी, वजूद अपना समेट रखना
इक आग दिल में लगी हुई है, जीस्त में मेरी इंकलाब कर दे

तुझको पाना या खुद को पाना, दौनों ही मसले हैं एक यकसां
दौनों के बीच का फर्क मिटा दे, कोशिशें मेरी कामयाब कर दे

बस एक रात बची है बाकी, कल का दिन जाने फिर कहां हो
आज की रात ही तोड़ दे कूज़ा, मेरे होने का किस्सा ख्वाब कर दे

ये मेरी हस्ती का आशियां, बन जा बागबां और आग दे दे
जरा भी नुकता कहीं बचे ना, पूरी तरह से तू राख कर दे

जान अब लब तक आ चुकी है, सामने भी मेरे आ जाओ वरना
कहीं न ऐसा हो चोट खा कर, 'बेनिशां' तुम्हें बे नकाब कर दे

करम - कृपा , दारे फानी - नश्वर संसार , वजूद - अस्तित्व , जीस्त - जीवन , मसले - तथ्य , यकसां - एक जैसे , कूज़ा - पात्र , आशियां - घोंसला , बागबां - माली , नुकता - अंश , बे नकाब - रहस्योद्घाटन

12. दुनिया की गिरफ्तारी कहीं

दुनिया की गिरफ्तारी कहीं, **दास्तां** न बन जाए

दास्तां गर बन गई, अबस **पहचान** न बन जाए

पहचान तो ठीक है, होती रहती है बाहम

मजा तो जब है, यकता **निशान** न बन जाए

निशान उसका सीने पर, फेरा लिया हर गली

कैफै मस्ती का कहीं, पैहम **बयान** न बन जाए

बयान गर्चे है यही, मर जाना है जीते जी

चाक गिरेबां देख, दुनिया **हैरान** न हो जाए

हैरानी उसे क्या, जो हस्ती से भी गुज़र गया

जो गुम ही हो गया, सिफ़त **ईमान** न बन जाए

ईमान वालों को ख़ुशी, रंज, दुनिया की नहीं फिक्र

जाने कब गिरे बर्क़, नागहां **कुर्बान** न हो जाए

कुर्बानी अपने नफ्स की, खिरद और खुद्दारी की

इश्क की मौज में 'बेनिशां', कहीं जाविदान न बन जाए

अबस - अनियंत्रित , बाहम - अकसर , यकता - अद्‌वितीय , पैहम - निरंतर , गर्चे - यद्‌यपि , चाक गिरेबां - अहं से मुक्त , सिफत - केवल , रंज - दुःख , बर्क़ - बिजली , नागहां - अचानक , नफ्स - मन , खिरद - ज्ञान , खुद्दारी - अस्तित्व , जाविदान - अमर

13. होगी ये दुनिया तमाशा

होगी ये दुनिया तमाशा, तमाशबीन नहीं हूँ मैं
कड़कती धूप हूँ जुहद की, नसीम नहीं हूँ मैं

बहुत हुई पुरकारियां, बहुत हुई निगहदारियां
उकता गया हूँ कशमकशों से, मुतमईन नहीं हूँ मैं

नफ्सो खिरद के परदों में, छुपा हुआ है ये मेरा खुद
ढूंढता हूं जिस खुद को मैं, खुद से बेहतरीन नहीं हूँ मैं

इक चाह है उस आग की, जला दे जो गिलाज़त तमाम
दिल में लिए सोजे दुरूं, कहीं खुदबीन नहीं हूँ मैं

निकल गया दायरे अय्याम से, बच गया अंजाम से
जिसमें मज़ाजी फसल हो पैदा, वो जमीन नहीं हूँ मैं

मैं हूँ बेकैद, जौलागाह हैं तेरे ये हफ़्त आसमान
हूँ दुनिया के मकान में, पर मकीन नहीं हूँ मैं

गर्दूं अफलाक अब मेरे, आराइश के हैं लबक
मश्शातगी में हो रवां 'बेनिशां', वो हसीन नहीं हूँ मैं

तमाशबीन - दर्शक , जुहद - विरक्ति , नसीम - सुबह की हवा , पुरकारियां - चतुराइयां , निगहदारियां - निरीक्षण , कशमकशों - संघर्षों , मुतमईन - संतुष्ट , नफ्सो खिरद - मन बुद्धि , गिलाजत - गंदगी , सोजे दुरूं - अंदरूनी आग , खुदबीन - निरीक्षक , दायरे अय्याम - समय चक्र , अंजाम - अंत , मजाजी - दुनियावी , बेकैद - मुक्त , हफ़्त आसमान - सात आसमान , जौलागाह - घूमने की जगह , मकीन - रहनेवाला , गर्दूं अफलाक - आकाश , आराइश के लबक - श्रंगारिक उपाधि , मश्शातगी - श्रंगार , रवां - लीन

14. मजाजी और हकीकी का

मजाजी और हकीकी का, मेल है बाहमी नहीं
नाक़ाबिल हूँ दुनिया के मैं, कश्फ भी दाइमी नहीं

हूँ ज़ुदा न हूँ शरीक, ताअस्सुबी ख़्यालों में कभी
मज़हबी पेचों ख़म की, सरगोशी मुझे लाज़मी नहीं

पहले महदूद थे इस जहां में, अब वो बेहद हो गए
उनके कूच कर जाने की, फ़िज़ा है मातमी नहीं

अजल अबद के पहले से, लेकर के अब आज तक
फ़ैजो करम की तुग़ियानी, उनकी कभी थमी नहीं

सादालौही पासबानी, उश्शाकी की बड़ी शान है
है संगदिल वो बशर जिसकी, आखों में नमी नहीं

बाँटते रहते हैं ख़िलाफ़त, अपने हर गुलाम को
उसके चाहने वालों को, आसूदगी की कमी नहीं

सब तरफ़ ही खोज की, ढूँढा किया था चार सू
जहाँ तेरा न हो औज़, 'बेनिशां' ऐसी ज़मीं नहीं

मजाजी - दुनियावी , हकीकी - ईश्वरीय , बाहमी - पारस्परिक , कश्फ - पूर्वानुमान , दाइमी - स्थाई , ताअस्सुबी - मज़हबी , पेचोख़म - बारीकियां , सरगोशी - शिकायत करना , लाजिमी - उचित , महदूद - सीमित , बेहद - असीमित , मातमी - शोकपूर्ण , अजल अबद - अनादि अनंत , फैज़ो करम - कृपाओं , तुगियानी - बाढ़ , सादालौही - सरल स्वभाव , पासबानी - रक्षा , उश्शाकी - आशिकी , संगदिल - पत्थरदिल , बशर - इंसान , ख़िलाफ़त - शिष्यता , आसूदगी - समृद्धि , चार सू - चारों तरफ , औज़ - ऊँचाई

15. हुब्बे पीराने तरीक़त यही मेरी पहचान है

हुब्बे पीराने तरीक़त, यही मेरी पहचान है
ए पीरे मुगां, अब तेरे सजदे में जिस्मो जान है

मिला दिया तूने मुझको, अपनी ज़ात से बेसबात
हज़ार सदके कदमों में तेरे, तुझ पे दिल क़ुर्बान है

जुर्रतें इसियां कभी अब उठती नहीं है भूल से
दिल मेरा हो चुका नफ्सानी, वसवसों से अन्जान है

कैसे करूँ मैं नुमूद, आलिया अज़मत को तेरी
अल्ताफो करम करते रहना, तेरी बुज़ुर्गी शान है

कर दिये तै हज़ार मुक़ाम, नज़रे इनायत से तेरी
यही मेरी है निशानी और यही मेरा ईमान है

हूँ जलीलो खार मैं, बुल हवस नफ्सानी रौ
दी पनाह नाकिस कमज़र्फ को, तेरा बड़ा अहसान है

क़ाबिल नहीं दीदार के, पर देख बस ये मुज्तरी मेरी
तेरी अदालत में आखिरी 'बेनिशां', यही मेरा बयान है

हुब्बे पीराने तरीक़त - महान आत्माओं का अनुसरण , पीरे मुगां - मैखाने का मालिक , ज़ात से बेसबात - स्थिति में नि:शंक , जुर्रतें इसियां - पाप करने का साहस , नफ्सानी वसवसों - ग़लत विचार मन के , नुमूद - प्रकट करना , आलिया - सर्वोत्तम , अज़मत - महानता , अल्ताफो करम - कृपाएँ , मुकाम - स्थान , जलीलो खार - भर्त्सना योग्य , बुल हवस - हवस का गुलाम , नफ्सानी रौ - मन अनुसार चलने वाला , नाकिस - अपूर्ण , कमजर्फ - अक्षम , मुज्तरी - व्याकुलता

16. बरास्ते ज़िक्रे कल्ब

बरास्ता ए ज़िक्रे कल्ब, तेरी ज़मीं हम पा गए
मरहला ए मारफत में, नसीब अपना जगा गए

मुझमें समाए रहते हैं, फिर भी हैं कुछ ज़ुदा ज़ुदा
उनकी फुर्कत को हम अपनी, क़िस्मत में लिखा गए

न पूछा क्या क्या मिला, उनकी बारगाह में 'बेनिशां'
ताअते हक़ वो बक्श गए, कुल्जुमे इश्क़ हम पा गए

मरने के बाद जब हुई, मुलाक़ात उनसे एक बार
अपनी डूबी कश्ती की दास्ताँ रो रो के सुना गए

अजब मुआमला है वो जो हैं उधर, वो मैं हूँ इधर
इस पर सुनाई कहानी ख़ुद की और मुझको रूला गए

सब चिलमन हुए चाक, बस एक आखिरी बाक़ी रहा
गिरा के पर्दा ए कुर्बे इलाही, आ के मुझमें समा गए

चिराग़ां आखिर यूँ हुआ, मेरी हस्ती की बज्म में कल शब
जला के चिराग़े आखिरत, 'बेनिशां' की जिंदगी बुझा गए

बरास्ता ए ज़िक्रे कल्ब - हृदय जाप के द्वारा , मरहला ए मार्फत - ज्ञान की स्थिति , फुर्कत - विछोह , बारगाह - स्थान , ताअते हक़ - ईश्वर आराधना , कुल्जुमे इश्क़ - प्रेम की नदी , मुआमला - मामला , चिलमन - पर्दा , चाक - टूटना , कुर्बे इलाही - ईश्वर सामीप्य , चिराग़ां - प्रकाश , बज्म - महफ़िल , शब - रात्रि , आखिरत - मृत्यु उपरान्त

17. आतिशे इश्क़ ने

आतिशे इश्क़ ने, सीना क़बाब कर दिया

जुल्मत परस्त ज़िन्दगी को, महताब कर दिया

चश्मकें ख़त्म हुईं, वस्वास सब मिट गए

पुर रौशन कर दिया और आफ़ताब कर दिया

मैं तो चल पड़ा ही था, दीवानगाने इश्क़ को

नफ्सानी ख़्वाहिशें ने क्यों, मामला ख़राब कर दिया

आसूदा था तेरे राज में, यास का कुछ काम नहीं

तावानी ए मुसलसल के लिए, क्यों बेताब कर दिया

मताए वेवहा मिली और दरपेश हुआ पुर निशात

तेरी आला बुज़ुर्गी ने, करम बेहिसाब कर दिया

मज़ाजी ख़्वाहिशों का मारा, ढूँढा जगह जगह अमां

यादे इशरते रफ्ता ने, यों जीना अज़ाब कर दिया

खिरद बसीरत हक़ क़रार, सब आज़मा के देख लिए

आख़िर जुनूँ अंगेजी ने 'बेनिशां' को कामयाब कर दिया

आतिशे इश्क़ - प्रेम की आग , जुल्मत - अँधेरा , महताब - चाँद , चश्मकें - संदेह , वस्वास - अविश्वास , आफ़ताब - सूर्य , नफ्सानी ख़्वाहिशें ने - मन की भ्रामक इच्छाओं ने , आसूदा - संपन्न , यास - निराशा , तावानी - दीप्ति , मुसलसल - निरंतर , मताए वेवहा - अमूल्य पूँजी , दरपेश - प्रस्तुत , पुर निशात - पूर्ण आनन्द , मज़ाजी - दुनियावी , अमां - शरण , इशरत रफ्ता - अतीत के सुख भोग , अज़ाब - कष्ट , खिरद - ज्ञान , बसीरत - अंर्तदृष्टि , हक करार - सत्य संकल्प , जुनूँ अंगेजी - पागलपन

18. दूर कर दे अलालतें

दूर कर दे अलालतें, सभी बेबस इंसानों की
तेरे दीवानों की और तेरे जरखरीद गुलामों की

यूँ तो मैखाने, दर पेश आते गए हर सहरा
साकी की अज़मत से, कदर ऊंची हुई मैखानों की

जब हाजत हुई मकबूल, खुदनिसारी की मेरी
शमा रौशन हुई ब वजह, हमसे परवानों की

कहने सुनने के परे जब, निकल गए सब मामलात
लबों पे बातें न आईं, अनकहे अफसानों की

यादें गुज़श्ता भी होंगी और होगी सरगुजिश्त
होंगी मशहूर कहानियां, कभी मुझसे नाकामों की

कितनी बार करूं बयां, उसके वो अल्ताफो करम
इक नज़र में कराई सैर, बुलंद ऊंचे मुकामों की

रोजे हिसाब जब होगा, मुकदमा मेरा पेशे ख़ुदा
दास्तानें लिखीं जाएंगी 'बेनिशां', मुझसे दीवानों की

अलालतें - तकलीफें , ज़रखरीब - क्रय किए हुए , सहरा - रेगिस्तान , अज़मत - महानता , हाजत - इच्छा , मकबूल - पुख्ता , खुदनिसारी - जान उत्सर्ग , बवजह - कारण से , परवाना - पतंगा , गुज़श्ता - पुरानी , सरगुजिश्त - आपबीती , अल्ताफो करम - कृपाएं , रोजे हिसाब - कर्मों का लेखा जोखा , दास्तानें - कहानियां

19. आशिक़ों का कर दिया ढेर

आशिक़ों का कर दिया ढेर, खामाख्वाह में
मे़राज कराई जाती है, अपनी कत्लगाह में

हर्फो सौत छोड़ दी, इक मुख़्तसर सी बात है
सारी कहानी कर दी बयां, बस एक आह में

तलाशे हक़ में इक मुअम्मा, बस बड़ा अजीब था
ढूँढता रहा ख़ुद को ही मैं, तुम्हारी चाह में

राहे सुलूके इश्क़ की, पुरकारियां न मुझसे पूछ
सिरकशी का चाव बहुत, तुम्हारी जौलागाह में

जाने क्या बात थी ये सिला, मिलता है कभी किसे
उफ़ न करी सिर चाक हुआ, तुम्हारी राह में

वो मोहतसिब हैं और उनकी, तौफीक है बेमिसाल
रहमतों को बक्शा जाता है, बस इक निगाह में

मैंने तो पूछा ही था कि, क्या मिलेगी मुश्क कुछ
बरपा दी जल्वागरी 'बेनिशां', अपने जवाब में

मे़राज - मोक्ष , हर्फो सौत - शब्द व आवाजें , मुख़्तसर - संक्षिप्त , बयां - कहना , तलाशे हक - सत्य की खोज , मुअम्मा - पहेली , राहे सुलूके इश्क - प्रेम मार्ग , पुरकारियां - चतुराइयाँ , सिरकशी - सिर काटना , जौलागाह - घूमने फिरने का स्थान , सिला - इनाम , सिर चाक - सिर कटना , मोहतसिब - रसाध्यक्ष , तौफीक - क्षमता , मुश्क - ख़ुशबू , बरपा दी - उंडेल दी , जल्वागरी - महान कृपा

20. ख़त्म कर सब ख़्वाहिशें

ख़त्म कर सब ख़्वाहिशें मेरी, तोड़ सब अरमान मेरे
बस अब ख़ुदा के वास्ते, बंद कर इम्तिहान मेरे

बहुत रोए बहुत गिड़गिड़ाए, बहुत की तुझसे इल्तिजा
सवालो जवाब बहुत हो गए, रोक लेना बयान मेरे

हर एक दिन हुआ है भारी, दिल मेरा है अब लगता नहीं कहीं,
ज़ात में अपनी गुम कर दे, चाक कर दे गिरेबान मेरे

न की इबादत न रखे रोज़े, न जिक्रो फ़िक्र में रहा था मशगूल
मार देना या बक्श देना, तेरी है मर्जी हम गुलाम तेरे

जाने कितनी कोशिशें की, तेरा साहिल मिला न मुझको
अब ये आख़िरी है कश्ती, ले ले वापस तूफ़ान तेरे

जाने कब से जुदा हूँ तुमसे, रोज़े अव्वल थे एक दौनों
क्या तुम्हें है फ़िक्र मेरी, अब तो ले लो सलाम मेरे

बहुत की कोशिश नहीं टूटता, तिलिस्मे हस्ती हुबाब मेरा
'बेनिशां' की यही है इल्तिजा, कुचल दे अब दिलोजान मेरे

ख़्वाहिशें - इच्छाएँ , इल्तिजा - प्रार्थना , ज़ात - महानता , चाक कर गरेबान - गला या अहं काटना , रोज़े - व्रत , जिक्रो फ़िक्र - जाप ध्यान , मशगूल - निमग्न , साहिल - किनारा , तिलिस्मे हस्ती - होने का रहस्य , हुबाब - बुलबुला

21. बेखुदी के बाद

बेखुदी के बाद आया सुकून, सुकून वो सुकून जो बेखुद बना दे
आहों के बाद किए थे नाले, नाले भी वो नाले जो दिल को रूला दे

बहुत चोट खाई बहुत रात जागे, पर पुर-सुकून कभी न आया
अब बस एक ही बचा है रास्ता, मेरी जलती हुई शम्मा तू बुझा दे

इम्तिहानों की तो हद हुई खुदारा, अब तुम इनको बन्द भी कर दो
हर रोज़ एक नया है इम्तिहान, तेरी क्या है मंशा, ये कुछ बता दे

जान हथेली पे लिए हूँ घूमता, कोई तो होगा जो ले सलाम मेरा
हस्ती का मेरी वज़न है भारी, है कोई जो मेरा बोझ बँटा दे

बहुत अच्छा है वक़्त वो ही, जो कटा नाम लेकर तेरा जुबां से
आँखें मेरी अभी नहीं पुरनम, दे चोट ऐसी जो मुझको रूला दे

दिल को देना बड़ी बात है, जान लुटाना तो कमाल बात है
खतम कर दे जला दे मुझको और खाक भी तू मेरी उड़ा दे

सुना है तेरे हैं हफ्त आसमान, बहुत उधर है ज़हूर तेरा
जाने कब तू मुझे पनाह देगा, ज़ात में अपनी 'बेनिशां' मिटा दे

सुकून - चैन , नाले - रुदन , खुदारा - हे ईश्वर , मंशा - इच्छा , पुरनम - गीली आँखें , हफ्त आसमां - सातों आसमां , जहूर - प्रकटीकरण , पनाह - शरण , ज़ात - ईश्वरत्व

22. वक्ते मुर्दन हिफ्जे इमां

वक्ते मुर्दन हिफ्जे इमां, तेरा निशाँ मौजूद रहे
बेनिशां मेरे न होने की, दासतां मौजूद रहे

जुर्रते रिंदाना किया, हदे इदराक से जा बाहर
दिले बीना वहदत का, आसमां मौजूद रहे

राहत फजा की वुसअतें, सोजे ग़म की इनायतें
साँस आख़िरी हो जब तक, इमां मेरा मौजूद रहे

अफसुर्दगी जाती रहे, उकवा में फिर ले मुक़ाम
इक़बाल तेरा रहे क़ायम, ये बयां मौजूद रहे

अख़्तरे सहर हो मेरा, जाविदां अफकारे अदम
मारफत के मरहलों में, मेरा मकाँ मौजूद रहे

निशान मेरा तआकुब करे, और मैं ग़ायब हो रहूँ
एहसां त़ेरा मौजूद रहे, तेरा बयां मौजूद रहे

जो भी था सब कुछ बताया, एक मुद्दा बाक़ी रहा
बस यही इल्तिजा 'बेनिशां', तेरा फैजान मौजूद रहे

वक्ते मुर्दन - मरते वक़्त , हिफ्जे इमां - निष्ठा की सुरक्षा , दासतां - कहानी , जुर्रते रिंदाना - पागल का साहस , हदे इदराक - बुध्दि की सीमा , दिले बीना - देखने वाला दिल , वहदत - एक ईश्वरवाद , राहत फजा - आनंददायक , वुसअतें - भरमार , सोजे ग़म - ग़म की तपन , इनायतें - कृपा , अफसुर्दगी - उदासी , उकवा - परलोक , इक़बाल - यश , बयां - कथन , अख़्तरे सहर - भोर का तारा , जाविदां - अमर , अफकार - चिंतन , अदम - मृत्यु , मारफ़त - ज्ञान , तआकुब - पीछा , इल्तिजा - याचना

23. गर्दूं अफलाकों से

गर्दूं अफलाकों से इक आया, मेरे लिए पैगाम है
हाथों में बका का जाम है, जबीं से तेरा सलाम है

फर्क नहीं किसी मजहब में, इक यकसानी है रवां
तेरे तौफीके एमाल की सीरत, ही मेरा इनाम है

रूह उरूज होती गई और मैं भी फना होता गया
दहरे लाहूती में अब बेनिशां, हो गया गुमनाम है

नाकामयाब हुई हिम्मतें, सिर्फ तेरी शबीह के वास्ते
रसाई ए औज़ की थाह में, किस कदर नाकाम है

खुलते चले जाते हैं पर्दे, जितने तय हों फासले
तेरी आलमे बिसीत देख, अक्ल मेरी हैरान है

काविशें सब निहां हुईं, राज़े यजदां खुल गए
तू नहीं मैं नहीं खुदा भी नहीं, ये मेरा मुकाम है

जीस्त के इस सफ़र में, आखिरी ये सबक मिला
ख़ाके आस्ताना है 'बेनिशां', मेरी यही पहचान है

गर्दूं अफलाकों - आसमानों , पैगाम - संदेश , बका - अमरत्व , जबीं - माथा , यकसानी - एक जैसे , रवां - प्रकट , तौफीके एमाल - कर्म क्षमता , सीरत - सद्गुण , उरूज - उठान , फना - लय , दहरे लाहूती - शून्य स्थान , शबीह - तस्वीर , रसाई ए औज़ - पहुंच ऊंचाई तक , आलमे बिसीत - विशाल बृहमांड , काविशें - मुश्किलें , निहां - लुप्त , राजे यजदां - ईश्वर रहस्य , मुकाम - स्थान , जीस्त - जीवन , ख़ाके आस्ताना - दर की ख़ाक

24. उनकी फुर्कत का वो पल

उनकी फुर्कत का वो पल, हर पल गुज़ारा जाएगा
नाशाद उनकी मुहब्बत में, रखकर निखारा जाएगा

हम हैं परवर्दा ए तूफ़ां और ये तुर्फाकारियां
फिर सँवारा जाएगा मुझे और फिर उभारा जाएगा

रंज हो ख़ुशी हो, मस्ती हो या फिर कैफ़ हो
कोई हालत हो नाम उनका, हरदम पुकारा जाएगा

जां वलब हो गया है, उनका ये नेशए इश्क़
कनाअत की रिवायत को, दुनिया में नकारा जाएगा

दफन हुआ तेरी गली में, जो दीवानगाने इश्क़
ओ सय्याद वो तेरे, आशिक़ों में शुमारा जाएगा

ये तेरी मश्शातगी और ये तेरी निगाहे क़हर
अच्छा ख़ासा तेरा आशिक, ग़म का मारा जाएगा

महो खुरशीदो अंजुम हैं गवाह, आज इस जिबह के मेरे
अब दहरे लाहूती बहर में, 'बेनिशां' उतारा जाएगा

फुर्कत - विछोह , नाशाद - दुःखी , परवर्दा ए तूफां - तूफ़ान के पाले हुए , तुर्फाकारियां - विलक्षणताएं , रंज - दुःख , कैफ़ - शान्ति , जां वलब - मृत्यु निकट , नेशए इश्क़ - इश्क़ का डंक , कनाअत - तुष्टि , रिवायत - परंपरा , नाकारा - त्यागना , दीवानगाने इश्क़ - प्रेम से पागल , सय्याद - शिकारी , शुमारा - गिना , मश्शातगी - श्रंगार , निगाहे क़हर - प्रकोप निगाह , महो खुरशीदो अंजुम - चाँद सूरज सितारे , जिबह - क़त्ल , दहरे लाहूती - शून्य क्षेत्र , बहर - समुद्र

25. कर अता ईमां

कर अता ईमां अपने, इस जरखरीद ग़ुलाम को
इस परेशान को और मग्नूम नाकाम को

जाने कहाँ भटकता फिरा, सोजे दरूं दिल में लिए
अपनी महफ़िल में जगह दी, मुझसे बदनाम को

क्या ही अच्छा हुआ जो, राज़े हक़ ज़ाहिर हुआ
सारी फ़िज़ा में फैला दिया, उसके पैग़ाम को

अच्छा नहीं लगता, बिखरना क़ीमती शराब का
दिल में अपने समेट रक्खूँ, तुम्हारे फैजान को

जब आख़िर करना ही था, तुम्हें मुझको तनक तू
फिर जगह क्यों दी चौखट पर, मुझसे परेशान को

निकला हूँ नाम ले के तुम्हारा, आलमे दहर में मैं अब
दुआ है कहीं न ख़राब कर दूँ, तुम्हारे पाक नाम को

ये तेरी खिरामे नाज और ये तेरी अजब निगाह
मेरे उफक से मिलवा दिया 'बेनिशां' तश्नाकाम को

अता - प्रदान , इमां - सत्यता , ज़रखरीद - क्रेता , मग्नूम - दुःखी , सोजे दरूं - भीतरी आग , राज़े हक़ - ईश्वर का रहस्य , ज़ाहिर - प्रकट , फ़िज़ा - मौसम , पैगाम - संदेश , फैजान - कृपा , तनक तू - निराश , आलमे दहर - जीवन संसार , पाक नाम - पवित्र नाम , खिरामे नाज - नाज़ भरी चाल , उफक - क्षितिज , तश्नाकाम - प्यासा

26. ऊंची परवाजों से लगा पता

ऊंची परवाजों से लगा पता, तेरे ठिकाने का
टूट गया तिलिस्म मेरे, सपनों के आशियाने का

राहे तलब में ख़ुद को, महशर खिराम ढूँढते
मज़ा मिला बेनिशां मुझे, ख़ुद को रूलाने का

मौसीकीए मज़ाज़ी छोड़, मौसीकीए हकीकी लूट
छेड़ दे अंदाज फिर, कोई दिल के तराने का

हो के बेसब्र तब, पेश किया था मक़तल में सर
अब कितने इम्तिहान लेंगे, मेरे सब्र आज़माने का

जहां माँगी थी मेराजी मैंने, तुमने हूरो गिलमा पेश कीं
क्या यही मिला था मौक़ा, मुझे नज़र से गिराने का

दीवानगी की करी ख़्वाहिश, पर होशियारी कर दी अता
ख़ुद में ही गुम हो गया, लगा जो तीर निशाने का

मंज़िलें जब तै होंगी नफ्सकुशी, जुहद, तकवा की मेरी
फिर मिलेगा रास्ता 'बेनिशां', तुम में समाने का

परवाजों - उड़ानों , आशियाने - घोंसले , राहे तलब - ईश्वर की राह , तिलिस्म - जादू , महशर खिराम - प्रलयकारी चाल से , मौसीकीए मजाजी - दुनिया का संगीत , मौसीकीए हकीकी - ईश्वर का संगीत , तराने - संगीत , मक़तल - क़त्लगाह , मेराजी - ईश्वरीय दर्शन , हूरो गिलमा - जन्नत की हूरें , ख़्वाहिश - इच्छा , नफ्सकुशी - मन पर नियंत्रण , जुहद - तप , तकवा - संयम

27. दुनिया के वसवसों में

दुनिया के वसवसों में, गिरफ़्तार नहीं हूँ मैं
तमाशा देख रहा हूँ, यहां ख़रीदार नहीं हूँ मैं

बेवजह रज्मे ख़ैरो शर में, उलझा दिया मुझे
मुजमिर हूँ कश्मकशों में, गुलज़ार नहीं हूँ मैं

सर पर ले के तेरी दुआओं को, ये मैं बेकरां
काम पूरा कर के उठूंगा, बेकार नहीं हूँ मैं

निकल चुका हूँ अब हदे ज़िन्दगी मुस्तआर से
हवसों ख्वाहिशातों का कभी बीमार नहीं हूँ मैं

कुश्ता ए ग़म घूमता फिरता हूँ मैं, चार सू
तेरे कूचे की दरगुज़र को क्या तैयार नहीं हूँ मैं

जब चुप हो बैठता हूँ, सोजे दरूं को लिए हुए
बार बार कुरेदते हो, क्यों बेक़रार नहीं हूँ मैं

जाने क्यों इतना सख़्त, संग दिल मैं हो गया
माफ़ हुआ था 'बेनिशां', फिर भी अश्कबार नहीं हूँ मैं

वसवसों - इच्छाओं , बेवजह - अकारण , रज्मे ख़ैरो शर - लड़ाई अच्छाई बुराई की , मुजमिर - निहित , कश्मकशों - संघर्षों , गुलज़ार - समृध्द , बेकरां - अथाह , ज़िन्दगी मुस्तआर - माँगे का जीवन , हवसों ख्वहिशातों - इच्छाओं , कुश्ता ए ग़म - गम का मारा , चार सू - चारों तरफ , दरगुज़र - आगमन , सोजे दरूं - अंदर की आग , बेक़रार - अशांत , संगे दिल - पत्थर दिल , अश्कबार - अश्रु पूर्ण

28. नक़्श अपना मेरे दिल में

नक़्श अपना, मेरे दिल में जमाए जाते हैं

मुझे करके बेघर, मुझमें घर बनाए जाते हैं

लूटा लिया अब क़ाफ़िला, बेसूद हस्ती का मेरा

बाकी कुछ बचा नहीं, मुझ ही को चुराए जाते हैं

बेसाख़्ता चले आते हैं, बिना कुछ पूछे ताछे

मेरे दहर में, जहां अपना बसाए जाते हैं

करके मुझको मुझसे परे, बना के मुझको हुबाब

बेनिशां, बेमहल अजाबों को जलाए जाते हैं

क़लम करके सिर मेरा, उड़ा दिया धुआँ मेरा

बेगानावर नज़रों से देख, अपना बताए जाते हैं

बज्मे तरब में चले आते हैं, फिर वो यकायक यूं

तीर चला नज़रों के, नक़्श ए हस्ती मिटाए जाते हैं

अब मैं तो हूँ नहीं, मकीं है कोई बहरूपिया

शाने करीमी से दोनों आलम, 'बेनिशां' जगमगाए जाते हैं

नक़्श - चिन्ह , खुदारा - ईश्वर के लिए , बेसूद - व्यर्थ , हस्ती - अस्तित्व , अबस - बिना बस के , बेसाख़्ता - अचानक , दहर - दुनिया , जहां - दुनिया , हुबाब - बुलबुला , बेमहल - व्यर्थ , अज़ाबों - कष्टों , क़लम - काट कर , बेगानावर - उदासीन , बज्मे तरब - प्रसन्न महफ़िल , नक़्श ए हस्ती - होने का चिन्ह , मकीं - स्थित , शाने करीमी - ईश्वर कृपा , आलम - दुनिया

29. जो कभी भी ठहरे

जो कभी भी ठहरे, वो मेरा कारवाँ क्यों होगा
जिसे पिलाई खुमो सागर से, तश्नाकाम क्यों होगा

पुर असर कर दिया, दिले नातवां को तूने
जिसको निहाल कर दिया, वो बेज़ुबां क्यों होगा

मुहीते बेकरां है तू खुर्शीद रहमतो अल्ताफ़ का
तुम्हारी रहनुमाई से बेख़बर, कोई इन्सां क्यों होगा

लाख करलें हम नापुसिशें, फिर भी तू करीम है
जिसे पता हो रहमत का तेरी, वो हैरान क्यों होगा

जो चल पड़ा राहे तलब में, बेसाख़्ता इक दिन
मंज़िल पर पहुँचेगा ही, कहीं और मकां क्यों होगा

लग्जिशें आएंगी क्यों और हौसले क्यों टूटेंगे
तेरी करीमी देख कोई, आखिर पशेमां क्यों होगा

मौकूफ हूँ रहमत पे तेरी, नहीं हूँ मैं आशुफ्ता कभी
जब बंदा है तेरा 'बेनिशां', मेरा इम्तिहान क्यों होगा

कारवाँ - काफिला , खुमो सागर - सुराही , तश्नाकाम - प्यासा , पुर असर - प्रभावशाली , दिले नातवां - कमज़ोर दिल , निहाल - पूर्ण , बेज़ुबां - बिना ज़ुबान के , मुहीते बेकरां - अथाह सागर , खुर्शीद - सूर्य , रहमतों अल्ताफ़ - कृपा , रहनुमाई - मार्गदर्शन , नापुसिशें - अनादर , करीम - कृपालु , रहमत - कृपा , राहे तलब - ईश्वर की राह , बेसाख़्ता - अवश्य , मकां - रुकना , लग्जिशें - लड़खड़ाहट , करीमी - दयालुता , पशेमां - लज्जित , मौकूफ - निर्भर , आशुफ्ता - व्याकुल

30. लज्जतें दुनिया की रहीं

लज्जतें दुनिया की रहीं, तो फ़क़ीरी ख़्वाब है
तेरे क़दमों ए पा में बैठ रहना, बड़ा सवाब है

ज़िन्दगी कर दी रायगां, बेवजह जौलागाह में
शैतानी इक चाल है ये, जो बड़ी अज़ाब है

महो खुरशीदो अंजुम भी, सामने हैं तेरे बे-सबात
दौनों जहां को करे रौशन, तू वो आफ़ताब है

दिले नातवां है मेरा, ए सोगवार ये जान ले
ख़ुद ही अपना सवाल है और अपना ख़ुद ही जवाब है

हफ्त आसमां की तवाफ, सिर्फ़ तेरी ढूँढ के लिए
जुदाई ने तेरी आखिर कर दिया मसला खराब है

शादमां तुम तो हुए, खेली जो बाज़ी इश्क़ की
चित और पट दौनों तुम्हारी, ये अजब हिसाब है

हद बेहद के परे है, माशूक तेरी जल्वागाह
पार करी सरहदे खुदी, अब 'बेनिशां' कामयाब है

लज्जतें - इच्छाएं , फ़क़ीरी - साधुता , क़दमों ए पा - पांवों , सवाब - पुण्य , रायगां - व्यर्थ , जौलागाह - घूमना फिरना , अज़ाब - कष्टप्रद , महो खुरशीदो अंजुम - चाँद सूरज तारे , बेसबात - व्यर्थ , रौशन - प्रकाशित , आफ़ताब - सूरज , दिले नातवां - अशक्त दिल , सोगवार - शोकाकुल , हफ्त आसमां - सातों आसमां , तवाफ - परिक्रमा , शादमां - प्रसन्न , अजब - अजीब , माशूक़ - प्रेमिका , जल्वागाह - दर्शन स्थली , सरहदे खुदी - अहं की सीमा

31. रात ज्यों ज्यों चढ़ी

रात ज्यों ज्यों चढ़ी और उफान चढ़ता गया
रूह उरुज करती गई, फैजान बरसता गया

जिंदगी है कनाअत, ज़िन्दगी अल्ताफे खुदा
मेरे होने का ख़ुद पर, एहसान चढ़ता गया

रंगतें बढ़ती गईं, जितनी भी काविशें पड़ीं
मुश्किलें आती गईं और ईमान निखरता गया

अमां मिली कहीं नहीं, सुराब दर सुराब ये
अपनी ख़्वाहिशों में क़ैद, इंसान मरता गया

तुगियानी बढ़ती गयी, कैफ़ियत अफशां हो गई
बुखार भी चढ़ता गया और एहतराम बढ़ता गया

पर्दों में निहां उसका राज है, वहदत की गम्माज है
हर पर्दाफाशी से फिर वह मुझे, हैरान करता गया

सहल हो गये मरहले और फ़िज़ा के रंग चढ़ते गए
इस तरह 'बेनिशां', तल्खिए अय्याम गुज़रता गया

उरूज - उठान , फैज़ान - कृपा , कनाअत - संतुष्टि , अल्ताफ - कृपा , काविशें - मुश्किलें , अमां - पनाह , सुराब - मरीचिका , तुगियानी - बाढ़ , कैफ़ियत - कृपा , अफशां - प्रगट , एहतराम - कृपा , निहां - छुपा , वहदत - एक ईश्वरवाद , गम्माज - प्रतीक , पर्दाफाशी - रहस्योद्घाटन , सहल - आसान , मरहले - तथ्य , फिज़ा - बहार , तल्खिए अय्याम - टेड़ा समय

32. कोई तो चारा होगा

कोई तो चारा होगा, मेरी अफसुर्दगी के लिए
सारा जहाँ खड़ा मुन्तज़िर, तेरी सरवरी के लिए

ये बहरे मारफते बेकरां और ये मेरा बेज़ार दिल
मुश्किल है लाहूती का नक़्शा, अंजान अजनबी के लिए

कोई भी इन्फआल क्या, धो पाए बद एमाल मेरे
शहीदाना जज़्बा है मतलूब, बस एक ज़िंदगी के लिए

तू है अख़्तरे सहर और मरहमे असरार है तू
फनाइयत बड़ी है मुबारक, उस वारफ्तगी के लिए

नज्जारा ए आफरीनश तो दुनिया है देखे रोज़ रोज़
पर आँख भी चाहिए बेनिशां, तेरी दीदावरी के लिए

छोड़ ग़ुलामी नफ्स की, ज़िक्रो फ़िक्र में हो महब
ये क़ायदा है मुफ़ीद, बाखुदा यूं हर किसी के लिए

पेश कर दिया सिर मेरा, साक़ी के क़दमों में मैंने
दिल, जिस्मों जाँ अब पेश हैं, 'बेनिशां' आसूदगी के लिए

चारा - इलाज , अफसुर्दगी - उदासी , मुन्तज़िर - प्रतीक्षित , सरवरी - प्रधानता , बहरे मारफते बेकरां - ज्ञान का अथाह सागर , बेजार - विमुख , लाहूती - शून्य , इन्फआल - प्रायश्चित्त , बद एमालों - कुकर्मों , मतलूब - वान्छित , अख़्तरे सहर - भोर का तारा , मरहमे असरार - रहस्य मर्मज्ञ , फनाइयत - लीन हो जाना , वारफ्तगी - स्वच्छंदता , नज्जारा ए आफरीनश - सृष्टिकाल का दृश्य , दीदावरी - देखने वाला दिल , नफ्स - मन , ज़िक्रो फ़िक्र - जाप ध्यान , मुफ़ीद - उचित , आसूदगी - समृद्धि

33. जब तक जिऊं तेरे इश्क़ में दिल

जब तक जिऊं तेरे इश्क़ में दिल, साबित मुक़ाम हो

हैरत अंगेज़ देख नज्जारे, क्यों अक़्ल हैरान हो

दिल लगाने के ज़रिये, जिदंगी मुस्तआर में बहुत

तेरे बिन लगे न जी, कुछ ऐसा इन्तज़ाम हो

ये रंगे तगय्युर, ये जवाल और ये सराब

दुनियाए आराइशे मश्शातगी में मक्र हराम हो

जीने लिए मरती है, ये मसरूर दुनिया की ज़ात

जीते जी मर जाना ये तेरा, साफ़ पैग़ाम हो

जाने कितनी किश्ती बदलीं, साहिल तेरा पाने को

कुछ ऐसा निज़ाम हो और मेरा काम तमाम हो

बस हुआ कश्मकशे दहर, हो गई शिकस्ताई बहुत

दिल से निकला ये आखिरी मुकम्मल बयान हो

हज़ार सद्के तुझपे जां से, हज़ार सजदे तुझे जबीं से

ए तस्वीरे गैब तुझे 'बेनिशां' से ख़ाकी का सलाम हो

साबित मुक़ाम - लक्ष्य आरूढ़ , हैरत अंगेज़ - विचित्र , नज्जारे - दृश्य , जिदंगी मुस्तआर - मांगे की ज़िन्दगी , रंगे तगय्युर - परिवर्तन के रंग , जवाल - नश्वरता , सराब - मरीचिका , दुनियाए आराइशे मश्शातगी - श्रंगार की दुनिया , मक्र - मक्कारी , मसरूर - प्रसन्न , पैग़ाम - संदेश , साहिल - किनारा , निजाम - प्रबंध , तमाम - अंत , कश्मकशे दहर - जीवन संघर्ष , शिकस्ता - टूटन , मुकम्मल - पूर्ण , सद्के - न्योछावर , सजदे - प्रणाम , जबीं - माथा , तस्वीरे गैब - ईश्वर , ख़ाकी - धूल

34. तेरी कायनाते इश्क़ में

तेरी कायनाते इश्क़ में, ख़ुद को बदलता जाता हूं
तख्लिए हयात के, दायरे से निकलता जाता हूँ

मताए बेवहा जो मिली तसव्वुर से तेरे मुझे
ग़लतियाँ करे जाता हूं, और संभलता जाता हूं

अज़ल अबद के दायरे से दूर होकर, के अब तो
खलाओं में, महशर खिराम चलता चला जाता हूँ

ये रंगे तगय्युर के मंज़र, ये रक्से ला-जवाली तेरी
राहत फजा मिली बेशक, फिर भी तरसता जाता हूँ

हवास रफ्ता हुए, पहुँच कर बेहिसी की हद में मैं
तुझसे ज़ुदा हूँ, इस सोजे दरूं में जलता जाता हूँ

कैफ़े मस्ती लिए, होकर के सबसे बेनियाज
अपनी हस्ती की, खुदनुमाई में पिघलता जाता हूँ

ताअते हक़ की मसर्रत लेकर, चल पड़ा था मुस्तफीद्
तकमीली के साँचे में अब, 'बेनिशां' ढलता जाता हूँ

कायनाते इश्क - प्रेम संसार , तख्लिए हयात - जीवन कटुता , दायरे - सीमा , मताए बेवहा - अमूल्य पूँजी , तसव्वुर - ध्यान , अजल अदब - अनादि अनंत , खलाओं - शून्य , महशर खिराम - प्रलयकारी चाल से , रंगे तगय्युर - परिवर्तन के रंग , मंज़र - दृश्य , रक्स - नाच , लाजवाली - अनश्वर , हवास रफ्ता - खोए हुए होश हवास , बेहिसी - महसूस न करना , सोजे दरूं - भीतरी आग , कैफे मस्ती - आनंद शांति , बेनियाज़ - पृथक , ताअते हक़ - ईश्वर आराधना , मसर्रत - ख़ुशी , मुस्तफीद् - वाजिब , तकमीली - पूर्णता

35. इस दारे फ़ानी से

इस दारे फ़ानी से यों, बचकर निकल गया
ये दीवाना तलब-ख़ू, सोजे वहदत में जल गया

नौ ब नौ फुसूं आते गए, राहे अफकार में
सिर पे करम की ली सिफ़त और सँभल गया

मुश्किलात का था वफूर, मौजे शोरिशी में मेरी
आख़िर दुश्वारियां देखकर, वो ज़ालिम पिघल गया

आसूदा था क्या करेगी, तल्खिए अय्याम भी मेरा
बहरे बेकरां की मौजे तलातुम, फिर भी सँभल गया

वो मोहतसिब हैं और इधर हूँ मैं खाक नशीं
उनका जमाल देख, दीवाना इश्क़ मचल गया

ये हरीमे नाज़ और ऊपर से ये नामुरादियां
फय्याज़ीए अज्मत देख, अगियार भी बहल गया

ओ परी पैकर, कमाल ये तेरा रूख और ये नकहत
ओ बेपनाह हुस्न, 'बेनिशां' तेरे सांचे में ढल गया

दारे फ़ानी - नश्वर संसार , तलब ख़ू - याचक , सोजे वहदत - एकईश्वरता की आग , नौ ब नौ फुसूं - नये नये जादू , अफकार - चिन्तन , सिफ़त - विशेषता , वफूर - तपन , मौजे शोरिशी - कोलाहल , आसूदा - निश्चिन्त , तल्खिए अय्याम - टेड़ा समय , बहरे बेकरां - अथाह समुन्द्र , मौजे तलातुम - उथल पुथल लहरों की , मोहतसिब - रसाध्यक्ष , जमाल - सौंदर्य , हरीमे नाज - प्रीतम का स्थान , नामुरादियां - विफलताएँ , फय्याजी - उदारता , अगियारी - शत्रु , परी पैकर - सुदंरतम , रूख - चेहरा , नकहत - सुगंधि

36. माफ़ किए जाते हैं

माफ़ किए जाते है ऐबों को, और छुपाए जाते हैं
कुर्बे इलाही के गिरां, पर्दे उठाए जाते हैं

वो शै जो कुदसियों को भी क्या होगी कभी अता
मेरी हस्ती को गर्दूं, खलाओं में सजाए जाते हैं

महो खुरशीदो अंजुम भी होंगे, फलक पे क़ायम भी होंगे
उधर बज्मे तरब में वो बशौक जगमगाए जाते हैं

सोजे दरूं लिए हुए, जब जल नहीं पाया पूरा
गिरा गिरा के बर्क़, अब मुझको मिटाए जाते हैं

हूरों गिलमा की ज़रूरत नहीं, अब इस खाकसार को
सर्फो पारसाई में मेरा जानो-दिल लगाए जाते हैं

जौके आगाही से, दिल को करके मेरे मौजज़न
अज्मत चमकाए चले जाते हैं, क़िस्मत बनाए जाते हैं

माइल करके कुर्बत में, शाने करीमी से ख़ुद अपना
सिला ए मुहब्बत देकर, 'बेनिशां' को मिटाए जाते हैं

कुर्बे इलाही - ईश्वर की समीपता , गिरां - मूल्यवान , शै - स्थिति , कुदसियों - फ़रिश्तों , अता - प्रदान , हस्ती - अस्तित्व , गर्दूं - आकाश , खला - शून्य , महो खुरशीदो अंजुम - सूरज चाँद तारे , फलक - आकाश , बज्मे तरब - प्रसन्न महफ़िल , सोजे दरूं - भीतरी आग , बर्क - बिजली , हूरों गिलमां - जन्नत की हूरें , खाकसार - क्षुद्र , सर्फो पारसाई - संयम , जौके आगाही - ज्ञान अभिरुचि होना , मौजज़न - तरंगित , माइल - झुकाकर , कुर्बत - क़रीबी , शाने करीमी - ईश्वरीय कृपा , सिला ए मुहब्बत - प्रेमोपहार

37. सारी दुआएँ बक्श दीं

सारी दुआएँ बक्श दीं, सारी सजाएं बक्श दीं
मौजू ए ज़दीद ये हुआ, सारी सिलाएं बक्श दीं

रंगे तगय्युर होते गए, बस एक वो क़ायम रहा
मुख़्तसर बात ये है कि, बस वफ़ाएं बक्श दीं

फिर्का आराई के एमालों से, कर दिया मुझको रिहा
बेकराएं बक्श दीं और मजमूआएं बक्श दीं

मैं तो कुछ भी था नहीं, बेसर्फा उदास सा
उस पीराने पीर ने मुझे, सारी अताएं बक्श दीं

इसके पहले कि निकले, मेरी दर्द भरी मजलूम आह
ज़ौके निगाह डाल के, बेपनाह गिराएं बक्श दीं

ये तेरी परवरदिगारी और ये तेरी मेहरबानियां
कुर्ब मयस्सर कर दिया, सारी अमाएं बक्श दीं

यास नाकामी के कफ़स में, कब से मैं तो बंद था
दिले हजीं मेरी 'बेनिशां', सारी फुगाएं बक्श दीं

मौजू जदीद - नवीन विषय , सिलाएं - इनाम , रंगे तगय्युर - रंग परिवर्तन , मुख़्तसर - संक्षिप्त , फिरका आराई - फिर्का परस्ती , एमाल - कर्म , बेकराएं - असीमता , मजमूआएं - संग्रह , बेसर्फा - बेकार , अताऐं - उपहार , आहे मजलूम आह - आह दमित की , ज़ौके निगाह - रसिक दृष्टि , बेपनाह - अत्यधिक , गिराएं - मूल्यवान , कुर्ब - समीपता , अमाएं - पनाह , यास - निराशा , कफ़स - पिंजरा , दिले हजीं - दुखित मन , फुगाएं - रोना

38. शब ए मैराज के लिए

शब ए मैराज के लिए, ख़्याल तेरा सजा लिया
हकीर पड़ा था राह में, तेरे करम ने उठा लिया

दौरे मसर्रत मिल गया, राहत फजां भी हो गई
हदे इदराके जाविदां, मैंने जिदंगी में पा लिया

दिल को तो सुकूं मिला, बज्मे तरब भी हो गई
तजल्ली ए तौहीद का पयाम, रूह को सुना लिया

महशर खिराम चाल से, पनाह मिली तेरी जात में
कैफ़ियतो इबादत लिए, नसीब अपना जगा लिया

जाने किसका था इंतज़ार, अजल से पड़ा था मैं
ख़्याल तो गुम हो गया, अबस 'बेनिशां' बना लिया

रज्मे ख़ैरो शर में मैं, फँसा रहा क्यों रात दिन
इनायत फिर तेरी हुई और आगोश में समा लिया

शेवा ए तस्लीम मिली, मेरे नसीब अब खुल गए
माबूद की याद को 'बेनिशां', सीने से लगा लिया

शब ए मेराज़ - मिलन रात्रि , हकीर - तुच्छ , करम - कृपा , दौरे मसर्रत - चैन का समय , राहत फजां - आनंद प्राप्ति , हदे इदराके जाविदां - बुद्धि सीमा की अमरता , सुकूं - चैन , बज्मे तरब - सुखी महफ़िल , तजल्ली ए तौहीद - एक ईश्वरवाद की कृपा , पयाम - संदेश , महशर खिराम - तेज़ चाल , पनाह - शरण , कैफ़ियतो इबादत - पूजा का नशा , अजल - अनादि , अबस - बिना बस के , रज्मे ख़ैरो शर - अच्छाई बुराई की लड़ाई , आग़ोश - आलिंगन , शेवा ए तस्लीम - पूजा का स्वभाव , माबूद - प्रियतम

39. जहां तेरा जल्वा हो

जहां तेरा जल्वा मौजज़न, दुनिया जन्नत क्यों कर न हो
मुहब्बत तेरी रहे क़ायम, फिर मसर्रत क्यों कर न हो

वाह तेरा बेकस्द इश्क़, वाह तेरी फुजूं जफ़ा
बेकरां पर्दे उठाए, फिर क़यामत क्यों कर न हो

चार सू फैले हुए हैं, शाने करीमी के ज़हूर
नूरे वहदत आश्कार हो, हर वक्त क्यों कर न हो

दावरे महशर हो आश्कार, अपने जमाली शफक में
नूर मामूर हो हर तरफ़, ऐसी सूरत क्यों कर न हो

क्यों न हो उसका एहतिराम, क्यों न हो उसकी नवा
जब कोई नहीं उसके सिवा, उसकी अज्मत क्यों कर न हो

या इलाही कर ले शुमार, अपने अज़ीज़ों में मुझे
हर पल हो वो जब ख़ैरख्वाह, उससे निस्बत क्यों कर न हो

कुल्जमे इश्क़ बह रही, उसकी इनायत करम है ये
खिरामे नाज देख देख, 'बेनिशां' मुहब्बत क्यों कर न हो

जल्वा - कृपा , मौजज़न - तरंगित , मसर्रत - ख़ुशी , बेकस्द - बिना स्वार्थ , फुजूं जफ़ा - प्रचुर अत्याचार , बेकरां - अथाह , क़यामत - प्रलय , चार सू - चारों तरफ़ , शाने करीमी - ईश्वर की शान , जहूर - प्रकट , नूरे वहदत - एकईश्वरवाद का प्रकाश , आश्कार - प्रकट , दावरे महशर - प्रलय , जमाली - शांत , शफक - लालिमा , मामूर - भरा हुआ , एहतिराम - आदर , अज्मत - महानता , ख़ैरख्वाह - देखभाल करनेवाला , निस्बत - संबंध , कुल्जमे इश्क - प्रेम की नदी , खिरामे नाज - नाज भरी चाल

40. दिले आतिश एक नज़र से

दिले आतिश एक नज़र से, जला के छोड़ दिया
शाने करीमी से नवाज़ा, अपना बना के छोड़ दिया

अल्ताफो करम करके, पहले तो बनाया अपना
दर्द से खूगर किया, अबस रुला के छोड़ दिया

मेरी जौके आगही देखी, तो रफअत कर दी अता
सुकूने जिदंगी दी, फिर खाक उड़ा के छोड़ दिया

इश्क़ की इनायतें, मुझे इर्शाद कर दीं आलिया
खिरद की मुज्तरीबी को, ख़लल बता के छोड़ दिया

जिदंगी तो थी मेरी सराबी, सोते हुए गुज़रा करी
चश्मे इल्तिफात देकर, नींद से जगा के छोड़ दिया

तश्ना काम था मैं, ये अजब दीदारे ललक मेरी
रूहानी मरहलों को बारहा, क्यों दिखा के छोड़ दिया

ख़ुद का हूँ करता दीदार गुम जबसे हुए मुझमें वो
जाते अज्मत को 'बेनिशां', मुझमें समा के छोड़ दिया

दिले आतिश - हृदय अग्नि , शाने करीमी - ईश्वरीय कृपा , ख़ाक - धूल , अल्ताफे करम - कृपा , खूगर - आदत , अबस - बिना बस के , जौके आगही - अभिरुचि , रफअत - बुलंदी , सुकूने जिदंगी - जीवन सुख , इनायतें - कृपाएं , इर्शाद - फ़रमाया , आलिया - सर्वोच्च , खिरद - ज्ञान , मुज्तरीबी - व्याकुलता , ख़लल - विरूपता , सराबी - मरीचिका , चश्मे इल्तिफ़ात - कृपा दृष्टि , तश्ना काम - प्यासा , दीदारे ललक - दर्शन अभिलाषा , रूहानी मरहलों - आध्यात्मिक स्थानों , बारहा - बारबार , जाते अज्मत - महान गुणों

41. एमाले शनीआ से हूँ

एमाले शनीआ से हूँ बस, गाफ़िल क्यूँ नहीं
इस जहाने तगैयुरात में हूँ, खुशदिल क्यूँ नहीं

बाबस्ता तेरी अज़ीम किबरियाई से हूँ, फिर भी मैं
बेकस्द पुरकारियों से हूँ , गाफ़िल क्यूँ नहीं

क्यूँ है मुझे गुरेज़ तेरी परवरदिगारी की मसाफत
फिर हूँ किसी डूबती कश्ती का, साहिल क्यूँ नहीं

तेरे अंजुमन में अहले महफ़िल रहा हूँ, फिर भी मैं
हूँ माइल क्यों नहीं और हूँ मुस्तकिल क्यूँ नहीं

मतलूब हूँ मगर तेरी जल्वागाही का सद बार
फिर शेवा ए तस्लीम का, मैं माइल क्यूँ नहीं

तुझसे बहम तकल्लुम, और ये तबस्सुम तेरा
कोशिशन गर बन सकता हूँ मैं कामिल क्यूँ नहीं

जला दे दिले हकीर, खुदारा अब तो गिरा दे बर्क
निगाहे इल्तिफात का 'बेनिशां', हूँ बिस्मिल क्यूँ नहीं

एमाले शनीआ - कुकर्म , गाफ़िल - विस्मृत , तगैयुरात - परिवर्तन , बावस्ता - संबंध , अज़ीम - महान , किबरियाई - बुज़ुर्ग , बेकस्द - बेमतलब , पुरकारियों - चतुराइयां , गुरेज़ - संकोच , मसाफत - फ़ासला , अहले महफ़िल - उपस्थित , मुस्तकबिल - मज़बूत , मतलूब - वांछित , जल्वागाही - दर्शन स्थली , शेवा ए तस्लीम - स्वभाव पूजा का , बहम - परस्पर , तकल्लुम - बातचीत , तबस्सुम - मुस्कान , बर्क़ - बिजली , या खुदारा - हे ईश्वर , दिले हकीर - तुच्छ दिल , इल्तिफ़ात - कृपा , बिस्मिल - घायल

42. रफ्ता रफ्ता जिंदगी में

रफ्ता रफ्ता जिंदगी में, अब मरने लगे हैं हम
जश्ने बहारां में खुल कर, निकलने लगे हैं हम

दौरे मसर्रत आ गया और कोहे फ़िक्र टूट गया
मुग़ालतों की जमी बर्फ़ से, पिघलने लगे हैं हम

तौबा का सर पे ताज लिये और चश्मे तर लिये
पुरानी आदतें छोड़ कर अब, बदलने लगे हैं हम

खुमो-सागर खुल गए, हम पर इस कायनात में
मिली जो ये सौग़ात, अब सँवरने लगे हैं हम

अपना सर मक़तल में, क़ातिल को करके पेश
ख़ुद अपनी ही मौत से, अब गुज़रने लगे हैं हम

तेरे तसद्दुक को सलाम, तेरी अताओं पे निसार
जो माक़ूल बात थी, वो बेसाख्ता करने लगे हैं हम

खुल गए मुकामात सभी, तुगयानी ए इश्क़ में
उसके बताए राहे रास्त पे 'बेनिशां', चलने लगे हैं हम

रफ्ता रफ्ता - शनैः शनैः , जश्ने बहारां - बहारों का मेला , दौरे मसर्रत - चैन का समय , कोहे फ़िक्र - चिंता का पहाड़ , मुग़ालतों - भ्रम , तौबा - प्रायश्चित्त , चश्मे तर - भीगी आंखें , खुमो-सागर - पात्र व सुराही , कायनात - सृष्टि , मक़तल - क़त्लगाह , तसद्दुक - कृपा , अताओं - कृपाओं , निसार - न्यौछावर , माक़ूल - उचित , बेसाख्ता - बेधड़क , तुगयानी ए इश्क़ - प्रेम की बाढ़ , मुकामात - चक्र , खफी - गुप्त , राहे-रास्त - उचित रास्ता

43. जब आसूदा था उनसे

जब आसूदा था उनसे, फिर जिरह क्यों हो गयी
बेख़ुदी की दराजी मेरी, आख़िर जिबह क्यों हो गयी

वादा किया ख़ुश आसूदगी का, उसने बड़े अन्दाज़ से
मैं तो था कुश्ता ए ग़म, फिर सुलह क्यों हो गयी

सुना था कूचा ए यार में, निकलेगा दीवानों का जुलूस
उनकी अंजुमन में फिर, मेरी जगह क्यों हो गयी

बाज़ आए न वो अपनी मेहमान नवाज़ी से कभी
रात भर फैजान बरसा, फिर सुबह क्यों हो गयी

सुनते है दौनों तरफ़ लगी होती है बराबर आग
उनकी भी हालत फिर, यों मेरी तरह क्यों हो गयी

तसव्वुफ के मामले भी यूं तो अजीब संगीन थे
बातें फिर जब साफ़ थीं, लेकिन शरह क्यों हो गयी

बाक़ी नहीं बचा फिर, उनकी सरवरी में भी मैं
मेरे होने की 'बेनिशां', फिर वजह क्यों हो गयी

आसूदा - संतुष्ट , जिरह - बहस , दराज़ी - लंबाई , जिबह - सिर काटना , आसूदगी - संतुष्टि , कुश्ता ए ग़म - ग़म का मारा , कूचा ए यार - प्रियतम की गली , अंजुमन - महफ़िल , फैजान - कृपा , तसव्वुफ़ - दर्शन , शरह - व्याख्या , सरवरी - सरदारी

44. बेगाने से हो गए हैं

बेगाने से हो गए हैं, ये जाने पहचाने लोग
मरते चले जा रहे हैं, जीने के बहाने लोग

एक और शिकार हो गया, उनकी निगाहें नाज का
अफसुर्दा होकर लगे, लहद मेरी उठाने लोग

मसर्रते जीस्त मिली नहीं, वक़्त निकला हाथ से
कैसे ये दीवाने लोग और कैसे ये बेगाने लोग

कुछ वाकया ये हुआ, चश्मे फुसूंसाज ने किया तमाम
शहर में सारे फैल गई, जो बात लगे छुपाने लोग

बज्मे निगारां छोड़ कर सब दैरो हरम को चल पड़े
मैकदे जब सब लुट गये, लगे शोर मचाने लोग

मेरा ही तो कुसूर था, जो राज अफ्शां कर दिया
बावजूदे एतराफ़ के, लगा गए मुझे ठिकाने लोग

इज्तराबी में सारा जहां, उस शफक को ढूँढा फिरा
कोई और तो मिला नहीं, लगे 'बेनिशां' को आज़माने लोग

बेगाने - पराए , अफसुर्दा - उदास , लहद - अर्थी , मसर्रते जीस्त - जीवन संतोष , चश्मे फुसूंसाज - जादुई आँखें , तमाम - समाप्त , बज्मे निगारां - सुदंरियों की महफ़िल , दैरो हरम - मंदिर मस्जिद , मैकदे - शराबख़ाने , अफ्शां - प्रकट , एतराफ़ - स्वीकार , इज्तराबी - व्याकुलता , शफक - सूर्य की लालिमा

45. जीता हूँ तेरी याद में

जीता हूँ तेरी याद में, महफ़िल में नहीं हूँ मैं
फ़ना हूँ तेरे कुर्ब में, महमिल में नहीं हूँ मैं

तायरे लाहूती हूँ मैं और ऊँची मेरी परवाज़ है
सैय्याद होगा मुश्किल में, मुश्किल में नहीं हूँ मैं

सनम आशना नहीं हूँ मैं, ख़ुद में भी नहीं हूँ मैं
बाँध ले जो दरिया को, ऐसे साहिल में नहीं हूँ मैं

सोजे दरूं दिल में लिए, एक बेपनाह आग को
दौरे सफ़र हूँ चल रहा, किसी मंज़िल में नहीं हूँ मैं

कुर्बते पैहम में हूँ फ़ना, राहत फ़जा में हूँ बका
शम्सो कमर हूँ आसमां का, आबो-गिल में नहीं हूँ मैं

कामिल शहीद हो गया, अपनी इशरत पहुँच गया
रास्ते में जो मायूस हों, उन बिस्मिल में नहीं हूँ मैं

ख़ाकी हूँ तेरे दर का तेरे, दिले हजीं शहर का तेरे
अस्ल बात है यही 'बेनिशां', महे कामिल नहीं हूँ मैं

फ़ना - लय , कुर्ब - सामीप्य , महमिल - पर्दा , तायरे लाहूती - शून्य का पक्षी , परवाज़ - उड़ान , सैय्याद - शिकारी , सनम आशना - मूर्ति पूजक , दरिया - समुद्र , साहिल - तट , सोजे दरूं - अन्तर्अग्नि , इशरत - पूर्णता , बिस्मिल - घायल , कुर्बते पैहम - समीपता की निरंतरता , राहत फ़जा - आनंददायक , शम्सो कमर - चाँद सूरज , आबो-गिल - मिट्टी पानी , दिले हजीं - दुखित मन , महे कामिल - पूर्णचंद्र

46. बेअदब बेनसीब होता है

बेअदब बेनसीब होता है, बाअदब बानसीब होता है
जो उनका हबीब होता है, वो जहां का हबीब होता है

राहे सुलूक की रवायतें, न पूछाकर मुझसे तू
जो जितना अमीर होता है, उतना ही ग़रीब होता है

कूए इश्क़ में घुसने के पहले, सर रख दे अपना चौखट पे
जो सर कलम दरपेश कर गया, मुक्कमल अदीब होता है

रहगुज़र तसव्वुफ का जनाब, ये रास्ता ए आम नहीं
इसमें जिसे मिले दाख़िला, वो ख़ुशनसीब होता है

पीरो मुर्शिद औलिया गिराम, माँगते हैं सबकी ख़ैर
न कोई रक़ीब होता है, उनका न कोई क़रीब होता है

पीरे मुगां की महफ़िल, ज़रिया ताअते हक़ का है
गैरियत सुपुर्दे खाक हुई, ये तो रिश्ता अजीब होता है

तौहीद की तजल्ली देखी और रसाई मिली ज़ात में
जितनी तू कुर्ब करे अता, उतना 'बेनिशां' क़रीब होता है

बेअदब - जो आदर नहीं करता , बेनसीब - भाग्यहीन , बाअदब - जो आदर करता है , बानसीब - भाग्यवान , हबीब - प्रिय , सुलूक - उच्च व्यवहार , रवायतें - नियम , कूए इश्क़ - प्रेम की गली , मुक्कमल - पूर्ण , अदीब - संस्कारी , रहगुज़र - रास्ता , तसव्वुफ़ - दर्शन , पीरो मुर्शिद - गुरु जन , औलिया गिराम - जन्मजात संत , रक़ीब - शत्रु , पीरे मुगां - मैकदे का मालिक , ताअते हक़ - ईश्वर आराधना , गैरियत - दूरी , सुपुर्दे ख़ाक - मिट्टी में मिल गई , तौहीद - एक ईश्वरवाद , तजल्ली - कृपा , रसाई - पंहुच , कुर्ब - सामीप्य

47. कैफ़े मस्ती के मतलूब

कैफ़े मस्ती के मतलूब, पारसाई है बनी
ख़ुद में गुम हो गया, जहाँ यकताई है बनी

अंजुमन के शोर में, खिलवतगरी मुहाल है
दिल ले चल उस दयार में, जहाँ तन्हाई है बनी

पीरे मुगां की जल्वागिरी, देखना आसान है नहीं
या चले चल ए दिल वहाँ, जहाँ बीनाई है बनी

जज्बो सुलूक के मरहलों से, उठाकर के मुझको एक दिन
फ़ना किया जाते-हक़ में, तेरी किबरियाई है बनी

लड़ने के वास्ते जंगजू, दुनिया की तस्खीरों से तेरी
और इंतज़ामे दीद के लिए, ये ज़ाहिदाई है बनी

बज्मे तरब गुम न होना, चलते रह मंज़िल है दूर
पहुँच गया आखिर वहाँ तक, जहाँ खुदाई है बनी

कैसा ये मुक़ाम है जहाँ मैं तू नहीं, और नहीं है खुदा
सदा आई जाते हक़ से 'बेनिशां', यहाँ इब्तिदाई है बनी

कैफ़े मस्ती - शांति आनंद , मतलूब - वांछित , पारसाई - पवित्रता , यकताई - अद्वितीय , अंजुमन - महफ़िल , खिलवतगरी - एकांत , मुहाल - मना , दयार - जंगल , पीरे मुगां - मैखानों का मालिक , जल्वागिरी - प्राकट्य , बीनाई - आंखों से देखना , जज्बो सुलूक - प्रेम व व्यवहार , मरहलों - स्थानों , फ़ना - लय , किबरियाई - बुज़ुर्गी , तस्खीरों - संमोहन , इंतज़ामें दीद - दर्शन , जाहिदाई - संयम , बज्मे तरब - प्रसन्न महफ़िल में , जाते-हक़ - ईश्वर , इब्तिदाई - प्रारम्भ

48. दिल में वहशत की

दिल में वहशत की, अब कोई वजह नहीं रही
क़दमों से तेरे जुदा कर दे, ऐसी गिरह नहीं रही

हवास रफ्ता हुए, दिले जार भी हुआ निसार
फ़क़ीरी है ये, जवाल दुनिया की तरह नहीं रही

तखैयुल में जो न सोचा, मुद्दआ वो ज़ाहिर हुआ
क्यों हुआ और कैसे हुआ, इसकी शरह नहीं रही

मुस्तकिल हूं कदमों पा का, कोई और जुस्तजू नहीं
अहवाल अब हुआ साफ़, शिकवे की जगह नहीं रही

अश्क़ आमेज़ घूमता, उस होश-रूबा की याद में
हुवेदा हूँ सुकूतो सुक्र में, अब कलह नहीं रही

खलाओं मे रूपोश हुआ, वजूद मेरा मिट गया
जो हुआ नक़्शे पा पे जिबह, उसकी जिबह नहीं रही

उफक पे आफ़ताब उतरा, जमाले यार ज़ली हुआ
राहत फजा जो मिली 'बेनिशां,' ऐसी सुबह नहीं रही

वहशत - घबराहट , गिरह - गाँठ , हवासे रफ्ता - होश हवास खोना , दिले जार - टूटा दिल , जवाल - नश्वर , तखैयुल - कल्पना , मुद्दआ - उद्देश्य , शरह - व्याख्या , मुस्तकिल - नियत , जुस्तजू - इच्छा , अहवाल - परिस्थिति , अश्क़ आमेज़ - आँसू भरी आँखें , होश-रूबा - होश उड़ाने वाला , हुवेदा - प्रकट , सुकूतो सुक्र - शांति और नशा , खलाओं - शून्य , रूपोश - सुशोभित , वजूद - अस्तित्व , जिबह - कत्ल , उफक - क्षितिज , आफ़ताब - सूर्य , जमाले यार - प्रिय का सौंदर्य , जली - प्रकट , राहत फज़ा - आंनददायक

49. निशां मिटा के अपना

निशां मिटा के अपना, फिर ये ग़ज़ल कहता हूँ
जाविदां शग़ल कहता हूँ, आबरू ख़लल कहता हूँ

खुदनिगारी किसकी करूँ, जब मैं ख़ुद में मैं ही नहीं
रज्मे ख़ैरो शर को मैं, खिरद की दखल कहता हूँ

बेकुलाही मैं हो गया, जहूरे हस्ती से कि अब
अपनी हस्ती को, ज़ाते मुतलक की नक़ल कहता हूँ

अफलाक से उतरी बर्क़, कर दी सीने में दफन
फनाई ए खला को, नूरे वहदत की फसल कहता हूँ

जादुई आँखों से जो, नज्जारा देखा करता था ख़ास
दुनिया की बीनाई को अब, हुबाबे-बेमहल कहता हूँ

उफक से जो उतरी, हवा-ए-तरब ऐसी कमाल
नामुदार हुआ ऐसा, सबको अपनी शकल कहता हूँ

गिरेबां चाक लिए, ये ख़ाकसार घूमा गली गली
इब्तिदाई में क़ायम हुआ, अब 'बेनिशां' असल कहता हूँ

जाविदां - अमर , शग़ल - नियम , ख़लल - भ्रष्ट , खुदनिगारी - आत्मनिरीक्षण , रज्मे ख़ैरो शर - अच्छाई बुराई की लड़ाई , खिरद - ज्ञान , बेकुलाही - नंगा सिर , जहूरे हस्ती - हस्ती प्राकट्य , जाते मुतलक - ईश्वर , अफलाक - आसमान , बर्क - बिजली , खला - शून्य , बीनाई - देखना , हुबाबे - बुलबुला , बेमहल - असंगत , उफक - क्षितिज , हवाए-तरब - हर्षित हवा , नामदार - प्रकट , गिरेबां चाक - कटा गला , ख़ाकसार - क्षुद्र , इब्तिदाई - आरंभ , क़ायम - पूर्ण स्थित

50. ढूँढता रहा उम्र भर

ढूँढता रहा उम्र भर, वो हमनशीं नहीं मिली
परी पैकर नहीं मिली, दिलनशीं नहीं मिली

उफ भी नहीं करी, जो शहादत का खेल था
सर चाक हो गया, जवां तलबी नहीं मिली

नफी का सुराब था और खला का हुबाब था
मेरे होने की न पूछ, जब आस्तीं नहीं मिली

चश्मे तर लिए हुए, आखिरश मायूस हुआ
दिलकशीं नहीं मिली, मज़हबीं नहीं मिली

कल्बे मुज्तर ढूँढता, तखय्युल में, ख़ुद को ही मैं
क़याम उनका बेकरां, जिसकी ज़मीं नहीं मिली

इज्तराबी की हद न पूछ, पशीमां मैं था नहीं
जान भी बवाल हुई और जानशीं नहीं मिली

तासीरे गम की वजह, सारे गिले मिट गये
दिले खुलूस मिला 'बेनिशां', दिले हजीं नहीं मिली

हमनशीं - प्रियतमा , परी पैकर - सुन्दरतम , दिलनशीं - दिल को लुभानेवाली , शहादत - समर्पण , चाक - टुकड़े , जवां तलबी - अत्याचार सहना , नफी - न होना , सुराब - मरीचिका , खला - ख़ाली , हुबाब - बुलबुला , चश्मेतर - भीगी आँखें , आखिरश - अंततः , मायूस - दुःखी , कल्बे मुज्तर - व्याकुल दिल , तखय्युल - कल्पना में , क़याम - स्थिति , बेकरां - अथाह , इज्तराबी - व्याकुलता , पशीमां - शर्मसार , तासीरे गम - गम का प्रभाव , दिले खुलूस - साफ़ दिल , दिले हजीं - दुखित मन

51. तेरी दीद की ख़्वाहिश का

तेरी दीद की ख़्वाहिश का, गुनहगार हुआ हूँ मैं
सिर पेशे क़ातिल करने को, बेक़रार हुआ हूँ मैं

अहसासे जियां क़ायम, कुलफते ग़म हुआ दायम
ख़ुद अपनी ही जीस्त का, ग़म गुसार हुआ हूँ मैं

ये तेरी खफी तिलिस्मी, ये तेरी शाने करीमी
मुजरिमे शौके दीद, तो जरूर, हर बार हुआ हूँ मैं

कब से हूँ मुन्तज़िर, ज़ौक़े इश्क में हरदम तेरे
जिदंगी-ए-मुस्तआर से न, गिरफ़्तार हुआ हूँ मैं

दीदावरी की खोज में इक, कासा ए शरर लिए
अल्ताफों में पिन्हा राजों का, राज़दार हुआ हूँ मैं

मिलेगा मुझे कब फिर, वो नायाब मौक़ा बसबाब
दिले आजार हुआ हूँ मैं, तार-तार हुआ हूँ मैं

कैफ़े मस्ती लिए हुए, तेरे तग़ाफ़ुल से हो मानूस
ए बेवफ़ा तेरा 'बेनिशां', यूं वफ़ादार हुआ हूँ मैं

दीद - दर्शन , अहसासे जियां - लुटने का अहसास , कुलफते ग़म - दुख संताप , दायम - नित्य , जीस्त - जीवन , ग़म गुसार - ग़म बाँटने वाला , खफी तिलिस्मी - छुपा तिलिस्म , शाने करीमी - ईश्वरीय कृपा , मुजरिमे शौके दीद - दर्शनाभिलाषी अपराधी , मुन्तज़िर - इच्छुक , जिदंगी-ए-मुस्तआर - माँगे की जिदंगी , दीदावरी - दर्शन , कासा - कटोरा , शरर - किरण , अल्ताफों - कृपाओं , पिन्हा - छिपा हुआ , नायाब - क़ीमती , बसबाब - सअर्थ , दिले आजार - दुखित दिल , तग़ाफ़ुल - उपेक्षा , मानूस - परिचित

52. जितना आता हूँ पास पास

जितना आता हूँ पास पास, किनारे दूर होते हैं
पुर-नूर रौशन थी बज्म, और शरारे दूर होते हैं

कोई तो तदबीर निकालो, वीरानी है गुमगश्ता सी
सहारा था जिनका सहरा में, वो इशारे दूर होते हैं

मेहरो माह की रोशनी, नहीं मुझको मयस्सर अब
बेकरां इश्किया की जुल्मत में, सितारे दूर होते हैं

उठ गया अब क़ाफ़िला, आलमे उफतादगी है यहां
इलाही कैसी मन्जिल है ये, सहारे दूर होते हैं

चला हूँ मज़बूत क़दम, राहे सुलूक में जब से मैं
दूर वाले तो दूर थे ही, अब क्यों हमारे दूर होते हैं

जाने कहाँ कहाँ के लोग, सिर पर उठाए हुए मुझे
सुना था कि मुसीबत में हो तो, अपने प्यारे दूर होते हैं

ये आशुफ्तगी ये दर्से जुनूं, और ये फस्लो बहार
अब आ जाओ 'बेनिशां' वर्ना, फुरकत के मारे दूर होते हैं

पुरनूर - पूर्ण प्रकाशित , बज्म - महफ़िल , शरारे - अग्निकण , तदबीर - तरकीब , गुमगश्ता - खोई हुई , सहरा - रेगिस्तान , मेहरो माह - चान्द सूरज , मयस्सर - प्राप्त , बेकरां इश्किया - अथाह प्रेम , जुल्मत - अन्धेरा , उफतादगी - निर्मलता , राहे सुलूक - ईश्वर की राह , आशुफ्तगी - व्याकुलता , दर्से जुनूं - उन्माद की शिक्षा , फस्लो बहार - बसन्त

53. होश उड़े जाते रहे

होश उड़े जाते रहे बाखुदा, कैसा वो फैज़ान था
कैसे न पीता, मेरे नाम आया जो जाम था

उस औज़ के सदके, उस फुसूं का मुरक्का
न दीद थी न दीदार था, अबस मेरा सलाम था

सुकूते मर्ग में लरजी चले जाती थी यूं परवाज़
गुफ्तार बन्द थी और सीना ब सीना पैग़ाम था

वो बेकिनार अफलाक, था महो खुरशीदो अंजुम मेरा
फ़रिश्ते जिसकी माँगे पनाह, कमाल का इंसान था

रक़्स से मामूर, जलसों के बीच जाने क्या हुआ
न तुमने कहा न मैंने कहा, ये भी क्या पयाम था

नज्जारा ए फरोज़ाई, और तुम्हारे दौरे हमनवाई
ख़िरद हैरान थी, वल्लाह कौन सा मुक़ाम था

ये मेहरो माह के चक्कर, ये सितारे ये शामे अबद
खिरामे नाज़ देख देख क्यों 'बेनिशां' हैरान था

बाखुदा - हे ईश्वर , फैजान - कृपा , औज़-ऊँचाई , फुंसूं - जादू , मुरक्का - जिन्न , दीदार - दर्शन , अबस - बिना बस के , सुकूते मर्ग - मृत्यु की शान्ति , लरजी - कांपी , परवाज़ - उड़ान , गुफ्तार - बातचीत , बेकिनार - अथाह , अफलाक - आकाक्षां , महो खुरशीदो अंजुम - सूरज चाँद सितारे , रक़्स - नाच , मामूर - पूर्ण , जलसों - उत्सवों , फरोज़ाई - रौशनी , दौर - चक्र , हमनवाई - बातचीत करनेवाला , खिरद - ज्ञान , मेहरो माह - चाँद सूरज , शामे अबद - अन्तहीन शाम , खिरामे नाज़ - नाज भरी चाल

54. तेरी रहबरी ने कुछ

तेरी रहबरी ने कुछ, ऐसा कमाल कर दिया
रंगते यूँ कर रंगीं कि, लालो लाल कर दिया

पहले गिलाजत दूर की और फिर किया पाक साफ़
मुझको निहाल कर दिया और पाएमाल कर दिया

शेवा ए तस्लीम करी अता और अज्मत से तेरी
सारी मुश्किलें करीं रफ़ा, ऐसा एहवाल कर दिया

न रही ख़्वाहिश कोई, ना कश्मकशे दहर ही रही
बेफिक्र किया बहारों खिजां, ऐसा एतदाल कर दिया

ख़ैरो आफियत ऐसी करी, दिल बेनियाज हो गया
मोड़ दी जीस्त की रौ और ख़ुश-एमाल कर दिया

अपना एतिमाद दिया और अपना अल्ताफ दिया
वो औज करी अता कि रश्के मिसाल कर दिया

क्या करूँ तेरे फज्लो रहम ने, जुबां मेरी बन्द की
करम ने तेरे 'बेनिशां' मुझे, बस लाजवाल कर दिया

रहबरी - पथ प्रदर्शक , गिलाज़त - गन्दगी , पाक साफ़ - पवित्र , पाएमाल - सद्कर्म , शेवा ए तस्लीम - पूजा की प्रवृति , अता - प्रदान , अज्मत - महानता , रफ़ा - दूर , एहवाल - परिस्थिति , कश्मकशे दहर - जीवन संघर्ष , बहारों खिजां - सावन पतझड़ , एतदाल - संतुलन , ख़ैरो आफियत - सुरक्षित , बेनियाज - स्वतंत्र , जीस्त की रौ - जीवन दिशा , ख़ुश एमाल - सद्कर्मी , एतिमाद - विश्वास , अल्ताफ - कृपा , औज - ऊँचाई , रश्के मिसाल - दूसरों के लिए आदर्श , फज्लो रहम - कृपा , लाजवाल - अमर

55. पेश है ये ख़ाकसार

पेश है ये ख़ाकसार, ख़ुद क़ुर्बानी के लिए
लेने मौजे इश्क़ तलातुम और तुगियानी के लिए

मेरी सलाहियत न देख, मुझे गुमगश्ती तस्लीम हो
जिसमें सुकूत हो अता, पामाल वीरानी के लिए

दिल मुंतज़िर है, उसकी कहने सुनने के वास्ते
जो कभी न हुई बयां, ऐसी कहानी के लिए

करते हैं खुदा बारहा, करते हैं बस यही दुआ
ज़र्रे ज़र्रे पर हो तेरी, महर आस्मानी के लिए

महशर खिराम और महवश, है मेरा बेताब दिल
निगहबानी के लिए और तेरी मेहरबानी के लिए

मेराज मुझे कर दे अता, कर दे मुझे सरफराज़
परदे का भी उठ जाए परदा ऐसी उरयानी के लिए

सब दिया फिर सब कुछ लूटा, बाक़ी शरर नहीं छोड़ा
इलाही कुछ तो छोड़ दो, 'बेनिशां' निशानी के लिए

ख़ाकसार - मिट्टी में मिला हुआ , क़ुर्बानी - उत्सर्ग , तलातुम - उथल पुथल , तुग़ियानी - तूफ़ान , सलाहियत - योग्यता , गुमगश्ती - खो जाना , तस्लीम - प्रदान , सुकृत - शान्ति , पामाल - तबाह , वीरानी - सुनसान , मुंतज़िर - प्रतीक्षित , बारहा - बार बार , ज़र्रे ज़र्रे - कण कण , महर - कृपा , आसमानी - ईश्वरीय , महशर खिराम - प्रलयकारी चाल , महवश - चाँद जैसी सुन्दर , निगहबानी - निरीक्षण , मेराज़ - मिलन , सरफराज़ - उच्च , उरयानी - नग्नता , शरर - कण

56. दर पर तुम्हारे खड़ा है

दर पर तुम्हारे खड़ा है, एक हकीर नाकाम सा
है तो कुछ हैरान सा और कुछ तश्नाकाम सा

कोई न आया पुर्सिशे हाल, मुझ नातुवां का पूछने
बस एक ही मानूस मिला, जो दे गया पयाम सा

ये तेरी कुर्बते पैहम, फना हुआ खुदी का हुबाब
फ़क़ीरी में गम्माज़े गैरत, हो गया नीलाम सा

शोरिशों से दूर होकर, बसेरा उज़लत में करो
इक जुनूनी दिलशिकन, ने भेजा नया पैगाम सा

हम्द उसको नापसंद, फिर भी मेरी हिम्मत देखिए
मुझ गमज़दा ने साक़ी को, पहुंचा दिया सलाम सा

नज़र कहीं भी आता नहीं, पिन्हा काशानों में हुआ
वो दस्तगीर, महरमी राहरोए, है कोई गुमनाम सा

मामला हदे इदराक का, हल वहदत ज़हूर से हुआ
उसका तदब्बुर देख 'बेनिशां', हो गया हैरान सा

हकीर - तुच्छ , तश्नाकाम - प्यासा , पुर्सिशे हाल - हाल पूछने वाला , नातुवां - दुर्बल , मानूस - परिचित , पयाम - संदेश , कुर्बते पैहम - समीपता , खुदी - अस्तित्व , हुबाब - बुलबुला , गम्माज़े गैरत - स्वाभिमान का प्रतीक , शोरिशों - कोलाहल , उज़लत - एकांत , दिलशिकन - दिल तोड़ने वाला , हम्द - स्तुति , गमज़दा - दुखित , पिन्हा - छुपा हुआ , काशानों - इमारतों , दस्तगीर - मददगार , महरमी - मर्मज्ञ , राहरोए - साथी , हदे इदराक - बुद्धि सीमा , वहदत ज़हूर - निर्गुण ईश्वर , तदब्बुर - दूरदर्शिता

57. मज़हब के पीछे पागल है तो

मज़हब के पीछे पागल है तो, अभी फ़क़ीरी दूर है
दस्तगीरी दूर है और दानिशवरी भी दूर है

ताअस्सुब है अगर कहीं तो, तसव्वुफ है कहीं नहीं
ऐसे उक्ता परस्तों को दिखाना, आइना ज़रूर है

उसकी ज़ात आली सबसे, सब मज़हबों से है परे
शेवाए रूहानी में, अल्लाह का होता जहूर है

सारे जहां को बाँट दिया, मज़हबों में अलग यहां
हो न हो ये मज़हबी सरमाएदारों का क़ुसूर है

नुक्ताचीं पुरकारियों की, चलती है नहीं यहां
माबूद तो आपसदारी और भाईचारे में महसूर है

इम्तियाज करना ग़लत है, यज्दां की तख्लीक में
उसकी इनायत औरों की गम गुसारी में मस्तूर है

बात सच ही कहूंगा, बिना तल्ख़ी के किसी
फिर चाहे हो जो हो, 'बेनिशां' मुझे मन्ज़ूर है

मज़हब - धर्म , मानिंद - कट्टर , दस्तगीरी - मदद , दानिशवरी - बुध्दिमत्ता , ताअस्सुब - संकीर्णता , तसव्वुफ़ - दर्शन , उक्ता परस्त - मतलबी , ज़ात आली - सर्वोच्च , शेवाए रूहानी - पूजा आध्यात्म , ज़हूर - प्रकट , सरमाएदारों - ठेकेदारों , नुक्ताचीं - छिद्रान्वेषण , पुरकारियों - चालाकियाँ , माबूद - ईश्वर , महसूर - छुपी हुआ , इम्तियाज़ - फ़र्क़ , यज्दां - ईश्वर , तल्ख़ीक - रचना , इनायत - कृपा , गमगुसारी - गम बांटना , मस्तूर - छुपा हुआ , तलखी - कड़वाहट

58. बस तेरी याद रहे

बस तेरी याद रहे दिल में, बाक़ी सब भूल जाना है
दीदार है ज़ाते मुतलक का, तेरी दीद तो बहाना है

कैफ़ियते सहवा ए अकीदत, कोई पूछे जां से मेरी
तसव्वुर का मक़सद तो बस, यार में मिल जाना है

नाबीना भटकता रहा क्यों, राहे सुलूक में 'बेनिशां'
मैं हूँ, तेरी याद हो, तन्हाई ही तेरा ठिकाना है

तकमील के मरहलों में, निकलता यूँ मैं चला गया
सहारा ले तेरी तवज्जह का, रूह को उठाना है

क्या होंगे माह पारो, क्या होंगे परी पैकर, मगर
अस्लियत अब अयां हुई, तुम्हें खुदा बनाना है

इधर ये बद एमाल मेरे, उधर ये किबरियाई तेरी
मुद्दतों के ज़ख़्मों को, तेरी आग में मिटाना है

सिजदा रवां हो गया, कैफ़ियत भी अफशां हो गई
जो जल्वा देखा 'बेनिशां', सारे बशर को सुनाना है

दीदार - दर्शन , ज़ाते मुतलक - परमेश्वर , दीद - देखना , कैफ़ियत - स्थिति , सहवा ए अकीदत - पूजा की मदिरा , तसव्वुर - याद , मक़सद - उद्देश्य , नाबीना - अन्धा , राहे सुलूक - ईश्वर की राह , तकमील - पूर्णता , मरहलों - स्थान , तवज्जह - कृपा , महा पारो - चान्द के टुकड़ों , परी पैकर - सुन्दर आकार , बद एमाल - बुरे कर्म , किबरियाई - बढ़ाई , सिजदा रवां - उचित प्रणाम , कैफ़ियत - शान्ति , अफशां - प्रकट , बशर - सामान्य लोग

59. फज्ल से अपने फज्ल को

फज्ल से अपने फज्ल को, बक्शा बड़े अन्दाज़ से
एक ही नज़र में पहुँचा दिया अंजाम तक, आग़ाज़ से

जज़्ब से सुलूक तक की, तय करा दीं सब मंज़िलें
पहुँचा दिया मेरा क़ाफ़िला, मिलवा दिया मेराज से

तारीकी में मुर्दा हाल सब, चले जा रहे थे बेसबात
सबको मोड़ा किब्ला ए हक़ पे, एक ही आवाज़ से

उसकी तवज्जह बेमिसाल और वुसअत बेमिसाल
मंज़िलें तय करीं नागहां, अपनी ऊँची परवाज़ से

मज़हबी ताअस्सुबों में, अब कुछ भी है रक्खा नहीं
मिलेगा अब कुछ नहीं, यहां पर इम्तियाज़ से

पेश्तर मोड़ दिया अब मेरा, कारवाँ ए ज़िन्दगी
दुनियावी मौसिकी नहीं निकलती, अब जीस्त के साज से

मैं नहीं, तू नहीं और कोई अनफास भी नहीं
कड़ी तोड़ी हस्ती की मेरी, 'बेनिशां' एजाज़ से

फज्ल - कृपा , अंजाम - अन्त , आग़ाज़ - आरम्भ , जज़्ब - प्रमोन्माद , सुलूक - उच्च व्यवहार , मेराज़ - मिलन , तारीकी - अन्धेरा , मुर्दा हाल - मृतक , बेसबात - क्षणभंगुर , किब्ला ए हक़ - ईश्वरीयता , तवज्जह - कृपा , बेमिसाल - अद्वितीय , वुसअत - क्षमता , नागहां - अचानक , परवाज़ - उड़ान , ताअस्सुबों - फ़र्क़ करना , इम्तियाज़ - अन्तर करना , पेश्तर- पहले , मौसिकी - संगीत , जीस्त - जीवन , अनफास - साँस , एजाज़ - कृपा

60. बर्बाद हो के मुहब्बत में

बर्बाद हो के मुहब्बत में, बेशक संवरना चाहिए
जीते जी मरना चाहिए, मर के जीना चाहिए

वो आए महफ़िल में, अंजुमन फरोज़ा हो गई
इस मताए बेवहा ख़ुशबू को बिखरना चाहिए

तल्खिए अय्याम तो यों गुज़रता जाता ही रहा
वक़्त आ गया अब उस पार, भी उतरना चाहिए

वो चारसाज हैं और वो हैं भी ग़ज़ब के गमगुसार
उनके अल्ताफों को, कूजाए दिल भरना चाहिए

खलवतकदे में बस, गोशा नशीनी ही मिली बज़ा
गुंबदे मीनाई से अब कोई फ़ैज़ बरसना चाहिए

राहे कुलफत के अज़ाबाब, तौबा तौबा अरे तौबा
राहजन तो बहुत मिले, अब कोई हमइना चाहिए

सुकूते मर्ग की मुझे, उन खलाओं में है तलाश
रूदादे ज़िन्दगी को भी अब, 'बेनिशां' ठहरना चाहिए

अंजुमन - महफ़िल , फरोज़ा - रोशन , मताए बेवहा - अमूल्य निधि , तल्खिए अय्याम - टेड़ा समय , चारसाज - उपचारक , गमगुसार - गम बाँटने वाला , अल्ताफों - कृपाओं , कूजाए दिल - हृदय पात्र , खलवत कदे - एकाकी का घेरा , गोशा नशीनी - एकांत , बजा - उचित , गुंबदे मीनाई - आकाशीय गुंबद , फ़ैज़ - प्रकाश , राहे कुलफत - राह के कष्ट , अजाबाब - दु:ख , राहजन - लुटेरे , हमइना - सहगामी , सुकूते मर्ग - मृत्यु की शान्ति: , खलाओं - शून्य , रूदादे ज़िन्दगी - जीवन कथा

Back Cover

इक नज़र से तोड़ दी, जंजीर हस्ती की मेरी

नीम बाज़ आँखों ने लूटी, जागीर हस्ती की मेरी

***

बर्बाद हो के मुहब्बत में, बेशक संवरना चाहिए

जीते जी मरना चाहिए, मर के जीना चाहिए

***

खोजा खुद को दूर तक, फिर भी मगर मिला नहीं

तायरे लाहूती हूं मैं, मेरा कोई नक्शे पा नहीं

***

ये कौन सा दयार है, जहाँ अपनी ख़बर नहीं मुझको

होश की पूछो तो होश है, कहीं मगर नहीं मुझको

***

आशिक़ों का कर दिया ढेर, खामाख्वाह में

मे़राज कराई जाती है, अपनी कत्ल गाह में

***

दुनिया के वसवसों में, गिरफ़्तार नहीं हूँ मैं

तमाशा देख रहा हूँ, यहां ख़रीदार नहीं हूँ मैं

***

निशां मिटा के अपना, फिर ये ग़ज़ल कहता हूँ

जाविदां शग़ल कहता हूँ, आबरू ख़लल कहता हूँ